क्रान्तिद्रष्टा भगतसिंह

शान्ति स्वरूप 'कुसुम'

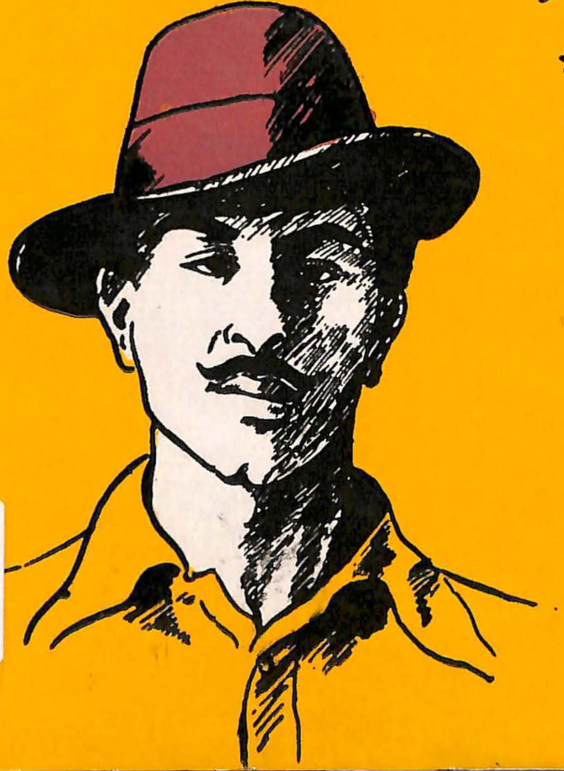

H
811.8
Sh 19 K
Sh 19 K

क्रान्तिद्रष्टा भगतसिंह

(खण्ड काव्य)

Indian Institute of Advanced Study
ACC NO.......
DATE.......

लेखक

शान्तिस्वरूप 'कुसुम'

प्रकाशक :

साहित्य वीथी

शाहदरा, दिल्ली–110 032

☎ 2429079

Library IIAS, Shimla
H 811.8 Sh 19 K
00110623

H
811.8
Sh 19 K

Indian Institute of Advanced Study
ACC NO. 110623
DATE 14.2.2003
SHIMLA

© लेखक

प्रकाशक : साहित्य वीथी
27/111, विश्वास नगर
शाहदरा, दिल्ली–110 032
☎: 2429079

संस्करण : 1997

मूल्य : 50.00 रुपये

लेज़र कंपोजिंग : साँई एडवरटाइजिंग, अर्जुन गली, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली–110032

मुद्रक : बालाजी ऑफसैट, नवीन शाहदरा, दिल्ली–110032

आवरण : श्याम जगोता

KRANTI DRASHTA BHAGAT SINGH BY SHANTI SWARUP 'KUSUM'

भूमिका

श्री शान्तिस्वरूप 'कुसुम' के अनेक काव्य ग्रन्थ प्रकाश में आ चुके हैं। इनमें लगभग सात पौराणिक प्रबन्ध काव्य हैं। देश की आजादी के लिए संघर्षरत अमर शहीदों पर 'सेनानी सुभाष' उनका पहला महाकाव्य है तो 'अमर शहीद भगतसिंह' दूसरा। इसी शृंखला में 'क्रांतिद्रष्टा भगतसिंह' तीसरे खण्ड काव्य की पाण्डुलिपि मेरे हाथों में हैं। इसका मैंने पूर्ण मनोयोग से अध्ययन किया है।

महाकाव्य 'अमर शहीद भगत सिंह' हमारे परिवार के मुखिया चौधरी फतह सिंह, जिन्होंने सन् १८५७ में अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत का बिगुल बजाया था, से आरम्भ होता है तो यह खण्ड काव्य उनके जन्म दिन २८ सितम्बर १९०७ से प्रारम्भ किया गया है। यह संक्षिप्त है, किन्तु इसमें सभी प्रमुख–प्रमुख घटनायें बड़े कौशल से चित्रित की गई हैं। उनके क्रांतिकारी जीवन का कोई भी महत्त्वपूर्ण प्रसंग कहीं छूटता नहीं और न कहीं टूटता ही है। उनके उद्देश्य एवं आदर्श पाठक के सामने मूर्तरूप ग्रहण करके खड़े हो जाते हैं और उसे झकझोरते हैं तथा कहते हैं कि देश के लिये स्वयं को अर्पित कर दो।

वे चाहते तो हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना के चीफ क़माण्डर अमर शहीद पं० चन्द्रशेखर आजाद की स्वीकृति लेकर दिल्ली असेम्बली में बम फेंक आते, फायर कर आते, ज्वाल–जाल भरे परचे फेंक आते और बाद में उनके निर्देश पर बड़ी सरलता से बचकर भाग सकते थे। किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया और बटुकेश्वर दत्त के साथ स्वयं ही आगे बढ़कर गिरफ्तारी दी।

साण्डर्स वध–काण्ड में पकड़े तो नहीं गये किन्तु केस खुलने पर, नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने उसी दिन उनकी उपस्थिति जो पुलिस रिकार्ड कलकत्ता में दर्ज करा दी थी, मुक्त होने के लिये इस दलील का भी सहारा नहीं लिया। नेता जी ने बहुत कहा किन्तु उनकी बात नहीं मानी। वे अपने निर्णय पर अडिग रहे।

उनके मन एवं मस्तिष्क में तो असेम्बली बम काण्ड में फ्रांस के अराजकतावादी वेलॉ की तस्वीर खिंची थी और गिरफ्तारी देकर देश पर कुर्बान होने में गदर पार्टी के शहीद शिरोमणि सरदार करतार सिंह सराबा, जिसे अंग्रेजों ने १९ वर्ष की आयु में फाँसी पर लटका दिया था, का चित्र अंकित था। उनका विश्वास था कि आज़ादी के इस यज्ञ में स्वयं को समिधा बनाकर, प्राणों को होम देने से, क्रांति जन–जन की बन जायेगी। वह अकेली होकर बिखरेगी नहीं। उनका यह विश्वास सत्य ही तो था।

मैं आशा करता हूँ कि भगत सिंह पर लिखा गया यह काव्य ग्रन्थ भी, पूर्व ग्रन्थ की भाँति उठती–उभरती पीढ़ी की मानसिकता को बदलेगा और उसे स्वरथ्य राह प्रदान करेगा।

श्री भगतसिंह मेरे बड़े भाई थे। मैं खुश हूँ कि कवि कुसुम ने एक महाकाव्य लिखने के पश्चात् भी यह खण्ड काव्य लिखा है। मैं उनकी भावनाओं की कद्र करता हूँ। इन्होंने भगतसिंह के जीवन का गहन अध्ययन किया है। अतः अपेक्षा करता हूँ कि सम्भावना बने तो उन पर एक इससे भी छोटे काव्य ग्रन्थ की रचना कर दें। क्योंकि मोटे–मोटे ग्रन्थ बड़े–बड़े पुस्तकालयों और अलमारियों की शोभा तो बन जाते हैं किन्तु नन्हें–नन्हें सुकोमल बाल हाथों की गरिमा नहीं बन पाते।

अंत में मैं कवि का आदर करते हुए उन्हें इस निर्माण के लिये बधाई देता हूँ। आशीर्वाद देता हूँ।

कुलतार सिंह
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

भगत सिंह निवास
प्रद्युम्न नगर
सहारनपुर (उ०प्र०)
17.8.96

सत्य और आनन्द का संयोजन

साहित्य शास्त्र में जो काव्य पुरुष की कल्पना की गई है, उसके अनुसार भाव काव्य का प्राण या आत्म तत्व है, तो भाषा उसका शरीर नामक तत्व है। अभिव्यक्ति का प्रकार उसके स्वरूप का विनिर्माण करने वाला तत्व है, तो छंद, अलंकार आदि उस भाव पुरुष की शोभा–वृद्धि करने वाले धर्म हैं। सहज प्रभावी, सहज स्मरणीय एवं सूत्र–रूप में होने के कारण ही विश्व में सर्वप्रथम साहित्य के अन्तर्गत काव्य को सर्वाधिक प्रश्रय मिला।

श्री शांतिस्वरूप कुसुम पौराणिक कथा काव्य के सिद्धहस्त कवि हैं। आपने दशरथ नन्दिनी, लोपामुद्रा, सुकन्या, जनकनन्दन आदि अनेक श्रेष्ठ काव्यों की रचना कर आधुनिक साहित्यकारों में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। दूसरी ओर एक के बाद एक, तीन ऐतिहासिक प्रबन्ध काव्यों की रचना कर कुसुम जी ने जीवन के आठवें दशक में चलते हुए भी अपनी उपस्थिति का बखूवी अहसास कराया है। तीनों ही काव्य ग्रंथ 'सेनानी सुभाष' 'अमर शहीद भगत सिंह' तथा प्रस्तुत काव्य 'क्रांतिद्रष्टा भगतसिंह' भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से ज़ुड़ी आधुनिक भारत की ऐतिहासिक गाथाएँ हैं।

काव्य सृजन मे कवि का व्यक्तित्व सक्रिय भूमिका का निर्वाह करता है। कवि स्रष्टा भी है और अनुकर्त्ता भी। वह सृजन भी करता है, आत्माभिव्यक्ति भी करता है, पर साथ ही उसमें अनुकरण का तत्व भी रहता है क्योंकि जो वस्तुएँ पहले से विद्यमान हैं उनके सादृश्य पर वह नयी सृष्टि करता है। श्री कुसुम स्वयं एक स्वतंत्राता सेनानी हैं। आपने भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा परतंत्रता की बेड़ियों को भी झेला है। हाँलाकि जिस समय भगतसिंह राजगुरु व सुखदेव के साथ फाँसी के फंदे पर झूल गए, उस समय कुसुम जी की आयु लगभग आठ वर्ष रही होगी, फिर भी प्रस्तुत काव्य को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है, जैसे सब कुछ कुसुम जी की आँखों के सामने गुजरी हुई घटनाएँ हैं।

भगतसिंह का सजीव चित्रण कर कुसुम जी का यह खण्ड काव्य यूरोपीय साहित्यकार डॉ० जानसन की कविता की परिभाषा पर खरा उतरता है– Poetry is the art of uniting pleasure with truth by calling imagination to the help of reason. अर्थात् कविता वह कला है जो कल्पना की सहायता से विवेक द्वारा सत्य और आनन्द का संयोजन करती है।

सरदार भगतसिंह अल्पायु में ही शहीद हो गए। वे वास्तव में क्रांतिद्रष्टा थे। अन्यथा ऐसेम्बली में बम फेंककर वे चाहते तो आसानी से छुपकर भाग निकल सकते थे। किन्तु उन्हें तो क्रांति का बिगुल बजाना था और वे अपने

उद्देश्य में सफल भी हुए। कवि कुसुम ने अत्यन्त सरल भाषा में ऐसी अनेक घटनाओं का वर्णन किया है, जिन्हें पढ़कर कहीं रोंगटे खड़े हो जाते हैं, तो कहीं जोश में बाजुएं फड़कने लगती हैं—

उठ भगत सिंह ने त्वरित वेग,
बम सबके पीछे को डाला,
हत्या न किसी की हो जाये,
ऐसा था अन्तर उजियाला।

अवसर था चाह अगर होती,
जाते ये भाग सरलता से,
ये पहरेदार हिमालय के,
खुद खेल रहे असरलता से।

—o—

जो कुछ करने की हसरत थी,
क्या हजारवां भाग किया?
जीता तो दिखलाता कुछ कर
क्या होता है क्रांति दिया?

मुझको है अभिमान देश पर
अपना शीश चढ़ाने का
यारो! मिले तुम्हें भी मौका,
पास हमारे आने का।

इस प्रकार अनेक चित्रण हैं, जिन्हें कवि कुसुम की वीर लेखनी ने अपने अनुभवों की स्याही से रंगा है।

प्रस्तुत काव्य ग्रंथ युवाओं में राष्ट्रीय संचेतना का इंजेक्शन लगाने में सहायक होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। किशोर एवं युवा छात्रों के लिए यह काव्य विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होगा क्योंकि इस ग्रंथ में ऐतिहासिक तथ्यों एवं तिथियों का प्रमाणिकता के साथ समावेश किया गया है। साथ ही प्रत्येक अध्याय के अंत में क्लिष्ट शब्दों के अर्थ व समुचित संदर्भ भी विस्तार से दिये गए हैं जो कि छात्र समुदाय के साथ-साथ अध्येताओं को भी उपयुक्त जानकारी प्रदान करने में सहायक होंगे।

डॉ० प्रदीप गुप्त
अध्यक्ष
साहित्य वीथी

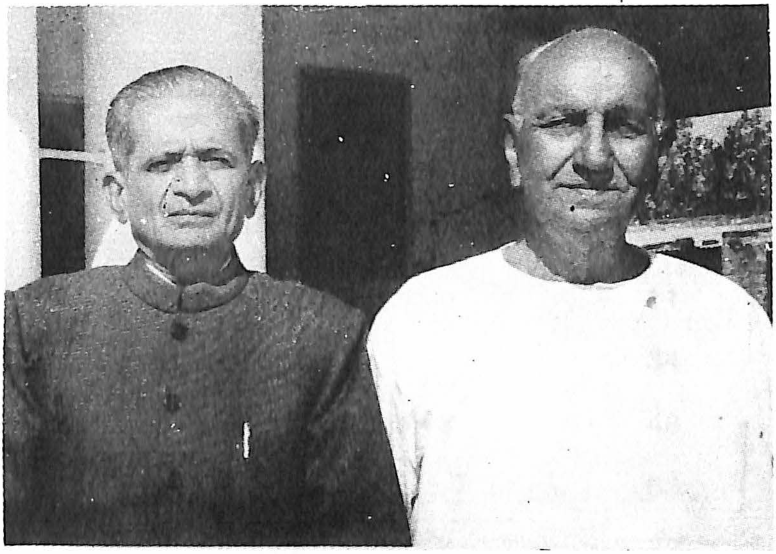

कवि, सरदार भगत सिंह के छोटे भाई,
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सरदार कुलतार सिंह के साथ

भगत सिंह पर, जो मरते थे, अर्पित कर निज प्राणों को
क्षण प्रतिक्षण उसकी चिंता में, होम दिया अरमानों को

सरदार कुलतार सिंह के कर-कमलों में
सादर समर्पित

कुसुम निकेतन
जगदीश पुरी गली न० 1,
गांधी रोड़ बड़ौत (मेरठ) 250611
फोन : 01234-62217

शांतिस्वरूप 'कुसुम'
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
15 अगस्त 1996

अनुक्रम

1.	भागोंवाला	11
2.	साण्डर्स वध	34
3.	असेम्बली बम काण्ड	48
4.	कारा	63
5.	जल्लादी निर्णय	73
6.	महाप्रयाण	82

भागों वाला : 1

वही नर, भागों वाला है
परवश भू-माता-दृग-आँसू पाँवों में जंजीर
झीर-झीर हो रहा निरन्तर रिपु के हाथों चीर
माँ को मुक्त बनाने में
आजा़दी ले आने में
जो दे दे निज प्राण वही नर भागों वाला है

स्वर्णालंकृत गगन हमारा मुक्त पवन स्वाधीन
अभ्यागत[1] वंचक[2] बन बैठा, लिया सभी कुछ छीन
अपना वह सब लेने में
शत्रु-पराजय देने में
कर दे निज बलिदान वही नर भागों वाला है

निजता जिसमें नीड़ मधुर वह तिनका-तिनका जोड़
बहुत बड़ा सन्तोष-रतन-धन, क्या हैं लाख करोड़ ?
वही गया अपना करने
सुख स्वप्निल आँचल भरने
अर्पित करदे गान वही नर भागों वाला है

जिसने छीना वह क्यों देगा, कितना बनो विनीत
कापुरुषों का काम संधि, रिपुओं के गाना गीत
जीना बन कर अभिमानी
बन जाना आँधी-पानी
जो लाता तूफान वही नर भागों वाला है

त्राहि-त्राहि मच रही चतुर्दिक सारा देश गुलाम
औरों को आगे कर देना नहीं शौर्य का काम
जो न पाँव पीछे धरता
अपने को आगे करता
बन जाता सोपान वही नर भागों वाला है

दिनमणि की हुंकार व्योम - भू
ध्वान्त[3] नष्ट हो जाते
कोकी-ध्वनि, पन्नग[4]-अमर्ष[5] खर
शून्य समा जाते हैं

चन्द्रोदय सम्पूर्ण धरा-
खो देती तपन देह की
निद्रा मग्न महोदधि भी
उबाल खाने लगते हैं

बोली यों जयकौर[6]-
''तनय विद्या[7] भागों वाला है
ग्राम गली के नर नारी-मुख-
आभा थिरक रही है

सारा ही बंगा उत्साह-
निमज्जित[8] सिन्धु अतल में
समाचार है तीनों आत्मज
बन्धन मुक्त हुए हैं

जेल मॉडले बर्मा में जो
थे अजीत[9] निर्वासित
उन्हें छोड़ने का आदेश
गया सत्वर[10] कारा से

किशन[11] सिंह, बेटा स्वर्णा[12] भी
छूट चला आया है
कैसा है सौभाग्य किशन-सुत
जो भू पर उतरा है

अट्ठाईस[13] सितम्बर शुभ सन-
सात, बड़े भागों का
भागों वाला कहूँ नहीं क्यों
होनहार बालक को ?''

अर्जुन सिंह[14] क्या ? सहमति के स्वर
सबके एक बने थे
भगत सिंह चरितार्थ नाम-
अनुरूप क्रिया कर्मों के

अंकुर उगते ही भविष्य के
सपने मँडलाते हैं
पाँव पूत के पलने में ही
देख लिये जाते हैं

कण्डीरव[15] सुत पैदा होते-
ही समर्थ चलने में
पड़ा श्रृगालों सा न धरा पर
चिऊँ-चिऊँ करता है

तीन वर्ष वय, भगत सिंह जब
तिनके लगे रोपने
बाग श्रमिक जन लगा रहे थे
बंगा की धरती पर

मेहता नन्द किशोर कह उठे
"किशन तुम्हारा सुत भी
कृषक बन गया चलो आज-
उत्तरदायित्व हुआ कम"

"क्या कर रहे भगत" यह सुनकर
किशन सिंह की वाणी
"बम्बूकें बो रहा" कह उठा
द्रुत वह स्वप्न चितेरा

कितने थे आनन्द मग्न
दोनों के हृदय प्रफुल्लित
नव निधियाँ सिद्धियाँ सभी ज्यों
उनकी गोद पड़ी हों

और कह रही हों आह्लादित
उमड़ घुमड़ कानों में
"शस्त्र क्रान्ति का यह रखवाला
पंथ प्रदर्शक होगा"

शिक्षा प्राईमरी स्कूल तक
बंगा में ही ली थी
नवाँकोट लाहौर पिता-
माता के पास गये फिर

नहीं खालसा, विद्यालय-
डी० ए० वी० दिया प्रशिक्षण
किशन चाहते उस बालक को
देश भक्ति सिखलाना

दयानन्द-शिक्षा अर्जुन की
आर्य समाज धुरी पर
दृढ़ प्रतिज्ञ थे रूढ़िवाद क्षय-
कर, घर का प्रक्षालन

मन्त्रोच्चारण यज्ञ-वेदिका-
आहुति देते-देते
डूब गये इतने, कर बैठे
दोनों तनय किशन के-

जगत-भगत भारत माता के
पद-पद्मों पर अर्पित
लाने को स्वतन्त्रता-सूरज
तम परतन्त्र हटाने

जैसे स्वयं चले जाते थे
पन्थ उसी पर चलने
पुत्र पौत्र सबके अन्तर की
उत्प्रेरणा जगाने

वार दिया माँ पर तो सारे
चिन्ह समर्पित करने
की बारी, जयकौर कह उठी-
''केश न कटने दूँगी-

पुरखों की थाती अक्षुण्ण-
रहे, इनको रहने दो
मेरा भी अधिकार कहीं तो
उसे न ठेस लगाओ

मेरे तीनों तनय जेल में
रहें और स्वामी भी
पौत्र बहुत प्यारे लगते हैं
बचपन झूम रहा है

जाने कितने दिन अबोध
बेला है दुलराने दो
फिर तो जान रही हूँ कोई
रोक नहीं पायेगा

माता की ममता, दादी की
ममता में अन्तर है
माँ पी गई खून के आँसू
दादी फूट पड़ी थी

सन उन्नीस सातवीं कक्षा
बारह वर्ष आयु थी
भारत माता[16] आन्दोलन तो
असहयोग के नारे

सुनकर चौकन्ना होता शिशु
प्राणों में हलचल थी
थी तेरह अप्रैल[17] काण्ड
जलियाँवाला हो बैठा

नस-नस में उबाल चौदह को
विद्यालय न गये थे
बस्ता तो ले लिया किन्तु
ज़लियाँवाला जा बैठे

लाशों पर लाशें, आहों से-
भरा हुआ भू अम्बर
बूँद-बूँद पानी की खातिर
तरस रही थीं साँसें

तीन तरफ दीवार, एक पथ
आवागमन वहीं से
और वहाँ भी गनमशीन
सबके हाथों बन्दूकें

बन्दूकों पर चमचम करती
संगीनों का साया
एक तरफ ज्यों काल, सामने
जीवन मृत्यु जोहते-

यही अधीनस्थों की दुनिया
वे सारे गुलाम थे
राजाओं के आगे जिनके-
प्राण मात्र माटी हैं

दीवारों पर खून, धरा पर-
खून, खून से लथपथ-
थे सब, रेंग रहीं कुछ लाशें
बेकल प्राण पखेरू

रोलट बिल न चलेगा सारा-
भारत उबल रहा था
एक बाल इस रिपु-लीला में
ज्यों निष्प्राण खड़ा हो

शीशी एक उठाई, रक्तिम-
माटी से भर ली थी-
ले, प्रतिदिन की भाँति शाम को
घर पर पहुँच गया था

दृढ़ प्रतिज्ञ, प्रतिशोध सुनिश्चित-
लूँगा, मैं ही लूँगा
रक्त चाहता रक्त, रक्त से
ही यह आग बुझेगी

मन है तो नर नहीं निबल है
इच्छा शक्ति प्रबल है
जिसे भेजता ईश न देकर
इस निरभ्र[18] अम्बर से

यह तो स्वयं सुनिर्मित करनी
होती यहाँ मनुज को
साध्य अगर सुगठित तो, साधन
चरणों में आते हैं

एक दहन तो दहन अनेकों
हृदयों को दहती है
एक धार ही बँटी हुई है
अलग-अलग खण्डों में

भू-जल तेज वायु सबमें ही
सकल एक भूतल के
निस्तल की जिनके ऊपर
रहती समान छाया है

मौन गहन गम्भीर खड़ा था
काटो खून न हो ज्यों
अमर कौर[19] ने पूछा भैया
क्या है बात बताओ

बोले नहीं, रहे कुछ करते,
रही देखती वह भी
बाहर गये पुष्प चुन लाये
स्वच्छ पूत भावों से

शीशी के चहुँ ओर सजाकर
थे प्रणाम मुद्रा में
जैसे ईश-वन्दना करते
झुक झुक मूर्ति-पुजारी

टूटा, ध्यान बुला भगिनी को
सारे घाव दिखाये
जो थे भरे हुए अन्तर में
और प्रतिज्ञा अपनी

सन इक्कीस गया आ बालक
वह नवमी कक्षा का
विद्यालय तज कर्म-क्षेत्र में
उतर गया सेनानी

किया प्रचार स्वदेशी वस्त्रों-
का घर-घर में जाकर
और विदेशी वस्त्रों की
होली का सुकृत संभाला

पाँच फरवरी[20] चौरी चौरा
गोरखपुर उफान था
कांगरेस की गतिविधियों में
तीक्ष्ण रोष लहराया

भगतसिंह का मन, क्या मन था
बज्र बनी वह रेखा
जिस रेखा में अंगरेजों का
सर्व नाश अंकित था

पन्द्रह वर्ष आयु आखों में
था करतार सराबा[21]
और न जाने कितने युग-
पुरुषों के चित्र खँचित थे

लाला[22] जी पंजाब नेशनल
कालिज को कर स्थापित
शस्त्र क्रान्ति के ढाँचे में
युवकों को ढाल रहे थे

नवमी पास न, परमानंद ने
लेकर भगत-परीक्षा
प्रथम वर्ष में नेशनल कालिज
में प्रवेश दे डाला

जुगल[23] और जयचन्द्र[24] जहाँ पर
शिक्षक क्रान्ति-पुजारी
प्रोफेसर सौंधी, मेहता भी
अन्य विषय समझाते

पढ़ा वहाँ पर रोलट बिल
वेलाँ की अमर कहानी
संसद फ्रांस गुँजाई जिसने
बम का किया धमाका

थे झण्डा, सुखदेव, भगवती
यश, जयदेव, जगत, से
माणिक मोती राष्ट्र भाल के
निर्विकल्प मनके थे

पहले बदला अमृतसर का
खून माँगती धरती
फिर निर्भीक पहुँच संसद में
मैं बम को डालूँगा

साथी संगी सभी जानते
भगत अटल प्रण वाला
एक दिवस बन सूरज, परवश-
तम वज्राद्रि[25] हरेगा

सिक्खों के आन्दोलन में भी
वे पीछे न रहे थे
खटक गये थे अंगरेजों की
आँखों में काँटा बन

शादी उनके लिये नहीं जो
बलिदानी राहों में-
हाथों में ले प्राण, आँधियों
को आमन्त्रित करते

Indian Institute of Advanced
ACC NO. 110623
DATE 14.2.2003
SHIMLA

नारी है कमजोरी नर की
जब संघर्ष-क्षेत्र में
करने को उत्सर्ग[26] प्राण उद्यत,
पीछे न देखना

यदि भूले से बँधा, प्रणय-
बन्धन में कहीं विवश नर
नारी को हाडीरानी बनना
आसान नहीं है

फिर विवाह बन्धन क्यों बँधते
भगत सिंह मतवाले
हरि निर्द्वन्द्व मातृ-बन्धन का
क्षय करने में रत था

था यज्ञोपवीत का वह दिन
स्मरण, उठा दादा ने-
आहुति देते, किया देश के
हित अर्पित था उनको

सन तेईस नेशनल कालिज
को प्रणाम कर निकले
विद्यार्थी गणेश शंकर का
था प्रताप कार्यालय

नाम बदल बलवन्त सिंह कर
अखवारों का विक्रय
क्रान्तिकारियों के ऐसे ही
होते कार्य अनोखे

पूर्ण कानपुर क्षेत्र समन्वित
दल योगेश प्रमुख थे
विजय, अजय, बटुकेश्वर अनगिन
थे सुरेश से साथी

गृह गृहिणी से दूर रमे थे
बनकर के संन्यासी
रात-दिवस दल की उन्नति के
लिये एक व्रत साधक

रुग्ण हुई जयकौर संदेशा
गाँव पड़ा था आना
यह भी था कर्तव्य, नहीं-
सीखा कृतघ्न कहलाना

यहाँ अकाली आन्दोलन था
ननकाना की होली
रक्त राक्षसी कृत अंगरेजों
का न सहन कर पाये

उलझ गये थे, जीवन का तो
लक्ष्य, सामना करना-
अंगरेजों का, अंगरेजों को
हर विधि धूल चटाना

मास्को तक यश का प्रकाश था
स्टालिन बुला रहा है
उसे ज्ञात क्या ? सर्वोन्नत
सिंहासन बुला रहा है

जत्थों का स्वागत बंगा में,-
जाते जैतों नाभा-
ऐसे किया न उनको कोई
सुविधा क्षीण लगी हो

कैसे सहता शासन हुक्म-
अदूली भगत सिंह की
कट वारंट गये थे पुलिस
प्रशासन पीछे उनके

सीधे पहुँच गये दिल्ली में
ले जयचन्द्र पत्र को
कार्य वीर अर्जुन में श्रम से
बहुत प्रसन्न इन्द्र[27] थे

नाम वही बलवन्त सिंह था
पूर्व कानपुर वाला
एक दिवस जब गये वहाँ पर
कार्यालय 'प्रताप' के

थे आजाद सामने उनके
सुखातिरेक दृग-आँसू
क्रान्ति-देवता क्रान्तिपुजारी
आज एक हो बैठे

फिर लाहौर गये भारत नौ
जवान सभा[28] बनाई
संविधान भगवती चारण ने
जिसका किया सुनिर्मित

उनके हाथों ही प्रचार था
उपमन्त्री पद लेकर
थे वे बड़े, न पनपी मन में
भेद-भाव की खाई

और निकटता की सीमायें
घुलमिल सिकुड़ गई थीं
नहीं दूध पानी का रिश्ता
ये तो दूध दूध थे

प्रान्त-प्रान्त में हुआ संगठन
का विस्तार निराला
सब आ-आ मिलते ज्यों सागर
में नद निर्झर अनगिन

एक पाँव लाहौर दूसरा
दिल्ली कभी कानपुर
भगतसिंह की इस प्रकार ही
चलती जीवन चर्या

जिसके ऊपर भार देश का
उसके हृदय कहाँ कल
घोड़े बेच न सोता ऐसा
मेले का व्यापारी

यह तो हरपल साँझ सवेरे
गोट बिठाया करते
किस गोटी से कहाँ किस तरह
बन्धन मुक्त बनें हम

और भेड़िया इंग्लिशतानी
आहत होकर भागे
वहाँ, जहाँ से व्यापारी बन-
आया हमको छलने

हमें छल गया, सारे वैभव-
पर अधिकार जमाया
नींव खोद पाताल डाल दी
निज प्रभुत्व, निज जय की

कांग्रेस के सब समाज-
वादी प्रवृत्ति के नेता-
वे सदस्य इस दल के कोई
गरम, नरम तो कोई

किया खुला अधिवेशन एक
शहीद गदर पार्टी का
मात्र एक पावन स्मृतियों का
यह बलिदान दिवस था

यह करतार सराबा जिससे
जन जन के मानस में
आजादी के हवन कुण्ड की
जिज्ञासा जाग्रत हो-

प्राणों की आहुति देने की
इच्छा में बल आये
सभा सहानुभूति में उसकी
पुष्प पल्लवित विकसे

उदाहरण ऐसे लाने से
स्फूर्ति स्वयं जगती है
स्वार्थ भाव को ऐसे ही कृत
नष्ट किया करते हैं

धवल वस्त्र खादी आश्रम का
पावन चित्र ढँका था
फैल सनसनी गई नागरिक
कौतूहल में डूबे

निज सदस्य तो थे ही, ऐसा
जुड़ा हुआ था मेला
जैसे अद्भुत स्वर्ग-छटा-
भू पर आने वाली हो

या आकर आच्छादित
धवल वस्त्र में बैठ गई है
दृगों-मनों में उतर सराबा
मूर्त्त रूप ले बैठे

दुर्गा थी भगवती चरण की
पत्नी उँगली काटी
रक्त प्रवाहित धवल वस्त्र को
लोहित से रंग डाला

दीदी उठी सुशीला वह भी
क्यों कर पीछे रहती
उँगली काट रक्त से उसने
भी रँगदी चादरिया

देश–भक्ति–अभिभूत हुई थी
जनता उस क्षण कितनी
नहीं काव्य की, निभृत कल्पना
यह तो भावुक मन की–

जय की भारत माँ के नारे
गूँज उठे अम्बर में
देश रक्षकों की श्रद्धानत
हो आरती उतारी

बोले भगत, भगवती बोले
दो किन्नरियाँ जैसे–
उर का अग्नि प्रवाह धरा पर
सहज उड़ेल रही हो

बारी–बारी से सदस्यगण–
आते निज भावों को
बिखरा जाते, जन समूह
पीड़ा से अकुला जाता

यों प्रचार निज दल का करते
व्यक्ति–व्यक्ति से मिल कर
अपना आशय समझाते थे
लगन शील सेनानी

नौ अगस्त पच्चीस[29] हुआ था
काण्ड वृहद् काकोरी
दलवालों ने रेल–खजाना
लूटा रेल रोक कर

आखिर अर्थ व्यवस्था कैसे
करते क्रान्ति पुजारी
भय रहस्य खुलने का, चन्दा-
करना ठीक नहीं था

अशफाकुल्ला, रोशन, विस्मिल
नर राजेन्द्र लाहड़ी
चारों को फाँसी[30] बाकी थे
कठिन दण्ड के भागी

दल प्रचार के साथ भगत इस
कृत भी कोर्ट कचहरी-
आते जाते वेश बदलकर
परम धर्म था यह भी

आखिर कार्य इन्हीं का ये सब
इनके दल वाले थे
नेता ने तो किया निमन्त्रित
भले नहीं आ पाये

जब घर से चलते थे अक्सर
ठीक ठाक चलते थे
ठीक ठाक का अर्थ यहाँ पर
अस्त्र शस्त्र संग होना

छल बल दल से वेश बदलकर
जगह-जगह जाते थे
पुलिस विफल थी किसी तरह भी
इन्हें पकड़ पाने में

सन् छब्बीस दशहरे के दिन
बम फेंका मेले में
कितने आहत, मृत्यु लोक को
गये निरीह मनुज थे

कार्य पुलिस का आरोपित कर
क्रान्तिकारियों का दल
उन्हें पकड़ कर कारा-गृह में
अमानवीय यातना-

देना, काण्ड अनेकों पिछले
खुलवाने का उपक्रम
अपना पथ प्रशस्त करना भी
उपक्रम में अन्तर्हित

पहुँच रेलवे स्टेशन अमृतसर
मन्थर गति मारुत
किसी फूल पादप से अपनी
व्यथा कथा कहने को

या सुनने को उसकी, चलता
यानी स्वप्न अनेकों-
को चित्रित करने उत्सव में
प्राणों का पुट भरने

भगत सिंह आगे, पीछे था
लगा सतर्क पुलिस जन
उन्हें पकड़ने लेकिन वे भी
देकर आँख मिचौनी

घर घुस गये सिंह शार्दूली[31]
सुप्रसिद्ध वकील थे
पिस्टल रख टेबिल पर सारी
स्थिति सत्त्वर बतला दी

बिठला वहीं भगत को, उठकर
वे बाहर आये थे
चलता किया पुलिस वाले को
आगे झाँसा देकर

दिनभर वहीं रुके निशि आई
अपनी पिस्टल देकर
ट्रेन बरहटा स्टेशन से ले
आ लाहौर गये थे

थे निश्चिन्त न शस्त्र साथ में
ताँगे पर आ बैठे
चलते-चलते पन्थ पुलिस ने
उनको पकड़ लिया था

था उनतीस जुलाई[32] का दिन
सत्ताईस वर्ष सन्
बहुत पैरवी करते, काकोरी
के अभियुक्तों की-

बिस्मिल की राजेन्द्र नाथ की
रोशन की मन्मथ की
अशफाकुल्ला की अधरों पर
नज्म[33] झूमती आई

Indian Institute of Advanced Study
ACC NO..........
DATE..........
SHIMLA

बहार आई है शोरिश[34] है जनून फितन : सामां[35] की
इलाही खैर रखना तू मेरे जेबों गरीबां की

भला जज्बाते उल्फत[36] भी कहीं मिटने से मिटते हैं
अबस[37] है धमकियाँ दारो रसन[38] की और जिंदां[39] की

वो गुलशन जो कभी आबाद था गुजरे जमाने में
मैं हूँ शाखे शकिस्त[40] हाँ उजड़े गुलिस्तां की

नहीं तुमसे शिकायत हम सफीराने[41] चमन मुझको
मेरी तकदीर में ही था कफस[42] और कैद जिंदां की

जमीं दुश्मन, जमां दुश्मन, जो अपने थे पराये हैं
सुनोगे दास्तां क्या तुम मेरे हाले परेशां की

ये झगड़े और बखेड़े मेंटकर आपस में मिल जाओ
अबस तफरीक[43] है तुम में यह हिन्दू और मुसलमाँ की

सभी सामाने इशरत[44] थे मजे से अपनी कटती थी
वतन के इश्क में हमको हवा खिलवाई जिंदां की

वे हम्दिल्लाह चमक उट्ठा सितारा मेरी किस्मत का
के तकलीदे हकीकी[45] की अता[46] शाहे शहीदाँ[47] की

इधर खौफे खिजां[48] है आशियां[49] का गम इधर दिल को
हमें यकसा[50] है तफरी है चमन और कैद जिंदां की

सन्दर्भ/शब्दार्थ

1. अतिथि, आया हुआ, 2. ठगनेवाला, 3. अन्धकार, 4. साँप, 5. क्रोध, 6. भगत सिंह की दादी, 7. भगत सिंह की माता, 8. डूबा हुआ, 9. अजीत सिंह भगत सिंह के बड़े चाचा, 10. शीघ्र, 11. भगत सिंह के पिता, 12. भगत सिंह के छोटे चाचा, 13. 28 सितम्बर सन् 1907, भगत सिंह का जन्म दिन, 14. भगत सिंह के दादा, 15. सिंह, 16. भारत माता सोसायटी, 17. 13 अप्रैल 1919 जलियाँवाला काण्ड, अमृतसर में अंगरेजों द्वारा निहत्थों का जनसंहार, 18. मेघरहित, 19. भगत सिंह की छोटी बहन, 20. 5 फरवरी सन् 1922 गोरखपुर के चौरी चौरा स्थान पर कांगरेस जलूस में उत्तेजना, थाने में 21 सिपाही और थानेदार को बन्द करके आग लगा दी, 21. 19 वर्षीय क्रान्तिकारी सरदार करतार सिंह सराबा जिसे, 14 सितम्बर 1914 को, अंगरेजों ने फाँसी पर चढ़ा दिया था, 22. लाला लाजपत राय, 23. आचार्य जुगलकिशोर, 24. पं. जयचन्द्र विद्यालंकार, 25. कठोर पर्वत, 26. बलिदान, 27. इन्द्र विद्यावाचस्पति, 28. नौजवान भारत सभा, 29. 9 अगस्त सन् 1925, 30. अशफाकुल्ला खाँ, रोशन सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र नाथ लाहड़ी, काकोरी काण्ड में चारों को फाँसी, 31. सरदार शार्दूली सिंह एडवोकेट, 32. 29 जुलाई 1927 को भगत सिंह की पहली गिरफ्तारी, 33. शहीदे काकोरी की अन्तिम नज्म, जो गिरफ्तार होने से 5 दिन पूर्व ही लिखी थी, 34. तेजी, 35. आतंक उठानेवाला पागलपन, 36. मुहब्बत, 37. बेकार, 38. सूली, बेड़ी, 39. कारागार, 40. टूटा हुआ, 41. साथ चहचहाने वाले, 42. पिंजरा, 43. अन्तर करना, 44. खुशी, 45. वास्तविक अनुसरण, 46. प्रदान करना, 47. शहीदों का राजा, 48. पतझड़, 49. घौंसला, 50. बराबर

साण्डर्स वध : 2

बीस वर्ष का बाल भगत
कारा का आँगन देखा था
स्वतन्त्रता की पहली सीढ़ी-
का बाँकापन देखा था

देखा था वह राजमहल
अर्जुन को बेहद प्यारा था
अपना खून पसीना, सिंचित
श्रम से जिसे निखारा था

किशन सिंह स्वर्णा आजादी
का व्रत लेकर आते थे
भारत माता के चरणों में
अपना शीश झुकाते थे

अजीत सिंह मॉडले वर्मा
लाला जी के साथ चले
आ-जा कर विदेश ही जिनके
अरमानों के दिये जले

यह सौभाग्य, जहाँ पुरखों ने
अपना धर्म निभाया था
पथ प्रशस्त कर देने श्रमयुत
बाल भगत भी आया था

था न तनिक अपराध जानता-
था इतना तो शासन भी
अन्य ग्रसित हों, इसी भाँति से-
खुल सकता वातायन भी

काण्ड अनेकों खुल न सके थे
सन बारह दिल्ली में बम
सन पच्चीस केस काकोरी
पुलिस प्रशासन था बेदम

सन छब्बीस दशहरे के दिन
बम उसने फिंकवाया था
क्रान्तिकारियों को ग्रसने का
केवल जाल बिछाया था

काकोरी का केस खोलने
लगे हुए जो अधिकारी
तसछुक हुसैन खान बहादुर
आये थे, पर लाचारी

भगत सिंह चट्टान सदृश थे
भावुक मन थे, भोले थे
कौन जानता इतने भोले
स्वयं आग के गोले थे

क्या होता ? था कुछ न, जमानत
दुनीचन्द्र ने तीस हजार
इतनी दौलत राम बन्धु ने
किशन सिंह की कीर्ति अपार

दो की बने अमानत कैसे
सकते हैं कृतज्ञ जन भाग
परवश तम में आजादी की
धधक रही थी उर में आग

भैंस पाल ली डेरी का कृत
व्यस्त हठीला साँझ प्रभात
क्रान्ति जगाने को काफी कुछ
खाली दिन था, खाली रात

हुई समाप्त जमानत-घड़ियाँ
भगत सिंह उन्मुक्त हुए
खुलकर आँधी पानी वाले
कार्यों में संयुक्त हुए

अट्ठाईस सदी माधव का
तपता मई महीना[1] था
काँटो से आँचल भरना तो
अर्पित खून पसीना था

भारत माता के चरणों में
घर से नाता तोड़ लिया
सीमायें तजकर, असीम से
रिश्ता नाता जोड़ लिया

गोदी में पहाड़ की कबतक ?
सागर में मिल बैठा था
भगत सिंह अब सारे भारत
की हो महफिल बैठा था

शिव वर्मा, सुखदेव मिल गये
विजय, चन्द्र शेखर नाहर
घर से काम न दीवाने का
रहते थे अब तो बाहर

नर सुरेन्द्र पाण्डे मनमोहन
कुन्दन मिल जयदेव गये
ब्रह्मदत्त फणीन्द्र से प्रतिदिन
पथ पर साथी नये-नये

आठ सितम्बर को, नौ को भी
दिल्ली फिरोजशाह किला
करने को विराट सम्मेलन
था निर्जन, निष्प्राण मिला

नया संगठन रचा गया था
जिसको 'हिसप्रस'[2] नाम दिया
और बहुत कुछ प्रथम भगत को
करने को यह काम दिया

"इन केशों से बहुत दूर से
ही पहचाने जाओगे
तनिक हुआ सन्देह पुलिस की
झट गिरफ्त में आओगे

सारे दल की गतिविधियों का
गढ़ पहचाना जायेगा
पूरे दल को नई मुसीबत
में यह चिन्ह फँसायेगा"

सत्वर बोले थे मरदाने
''बाल सुबह कट जायेंगे
शंकाओं आशंकाओं के
घन प्रात: छँट जायेंगे''

दादा अर्जुन सिंह सामने
दादी आ जयकौर खड़ी
बोली थी ''घबरा मत बेटा
भागों से यह मिली घड़ी

तू भागों वाला भागों की
घड़ियों को मत बिसराना
मैं न एक दादी, विद्या माँ
अब दादी, माँ है नाना

नहीं एक का आज हजारों
लाखों का तू बेटा है
बहुत बड़े भागों वाला तू
नहीं भाग का हेटा है

नहीं एक की जाने कितनों
की तुझको तो सुधि लेनी
नहीं एक घर की, सारे-
भारत की नैया है खेनी

चलता चल, पतवार चलाता
बाधा मिले हटाता चल
झुके न तेरा माथ कभी
अलमस्त तराने गाता चल''

टूटा ध्यान द्रवित थी आँखें
पर लगने दी नहीं झड़ी
भारत माता की पुकार थी
आगे मंजिल बहुत बड़ी

नौ[3] को अरुण भोर आई थी
भगत सिंह के बाल कटे
सम्भावित आगत विपदा के
बादल अपने आप छँटे

नाम बदल रणजीत सिंह था
भगत सिंह मतवाले का
'हिसप्रस' ने यह नाम दिया था
भारत माँ रखवाले का

थे आजा़द कमाण्डर सब
आदेश समुद[4] स्वीकारे थे
जो करना उनकी आज्ञा से
अग्रज स्वयं विचारे थे

लार्ड साइमन का बाबेला
मचा हुआ घर बारों में
नारा था 'गो बैक साइमन'
नगर-नगर गलियारों में

दल ने भी विरोध करने के
निश्चय को दुहराया था
सभी छोड़ लाहौर पहुँच कर
जाल सुदृढ़ फैलाया था

तीन फरवरी उतर बम्बई
स्वागत सतकारी घड़ियाँ
कठिन बनाने को तत्पर थीं
भारत माता की कड़ियाँ

बना कार्यक्रम अक्टूबर में
आने का लाहौर नगर
क्रान्तिकारियों की टोली थी
खड़ी रेलवे पर तत्पर

भगत, लाजपत राय निकट जा
आयोजन-नेतृत्व दिया
पुलिस अधीक्षक स्काट जिन्होंने
वहाँ पहुँच निज कार्य किया

असिस्टेन्ट साण्डर्स बुलाकर
सौंप दिया अधिकारों को
आँच न आये अंगरेजों के
स्वप्न सृजन गुलजारों को

लार्ड कमीशन जिस द्वारे से
आयें वह रस्ता रोका
सबसे आगे थे लाला जी
जैसे तूफानी झोंका

सर पर, छतरी लगी हुई थी
जिसको नौजवान थामे
सब रत उनके अनुशासन में
कमी न लार्ड-अवज्ञा में

जैसे आये, लार्ड साइमन-
के 'गो बैक' लगे नारे
नौजवान भारत दल के जन
उगल रहे थे अंगारे

स्काट और साण्डर्स विकल ज्यों
भस्म करें हलचल सारी
लन्दन से आनेवाले को
दिखला दें ताबेदारी

लाठी चार्ज किया बिखरे जन
हिली न लाला जी टोली
जितना हुआ प्रहार कि उतनी
भारत माँ की जय बोली

पुलिस संभाल नहीं पाई जब
ले साण्डर्स उठा डण्डा
लाला जी की छतरी तोड़ी
चुना पुलिसिया हथकण्डा

सारे क्रान्तिकारियों पर ही
यह प्रहार अनहोना था
जिधर न घूमा हो लाठी-क्रम
एक न बाकी कोना था

घात लगाकर लाला जी के
कन्धे पर प्रहार भारी
रोका इस आन्दोलन को तब
साँझ सभा की तैयारी

कहा सभा में लाला जी ने
बन्धु बान्धवो जरा सुनो!
मुझ पर चोट प्रशासन की जो
अब तुम इसका अर्थ गुनो

मुझ पर पड़ी चोट है जो यह
नहीं चोट समझो मुझ पर
अन्तिम[5] कील कफन की है यह
इस अंगरेजी शासन पर

अगले माह नवम्बर सत्रह[6]
को वह स्वर्ग सिधारे थे
क्रान्तिकारियों की आँखों से
बहते आँसू खारे थे

भगत सिंह से नर नाहर को
बचनों ने झकझोरा था
दृढ़ प्रतिज्ञ साण्डर्स मृत्यु का
दृग में रक्तिम डोरा था

हतप्रभ अब आजाद नहीं थे
स्वीकृति के स्वर मिला दिये
सहमति सभी साथियों की ले
पूर्ण सिद्धि हित यत्न किये

जयगोपाल लगाया उसकी
करने को पहरेदारी
कहाँ कौन पथ आता जाता
बेला उजली अँधियाली

कभी बगल से, गोलबाग से
टाउन हाल कभी होकर
खड़ी साइकल मोटर करते
निश्चित एक स्थान दफ्तर

राजगुरु भी देखचुका था
ज्ञान साइकल का न जिसे
क्रान्तिकारियों को यह बाधा
आड़े आती कहाँ किसे ?

मन में यदि संकल्प सुदृढ़ है
कार्य सभी सध जाते हैं
अविरल गति चलने वालों को
माथा लक्ष्य झुकाते हैं

दो दिन पहले स्वयं निरीक्षण
भगत सिंह कर आये थे
आ आजाद खड़े थे अब
सपने साकार बनाये थे

राज छुपाये एक रिवाल्वर
मजे-मजे से पैदल ही-
आया, जहाँ खड़ा होना था
मुदित मिली ज्यों मंजिल ही

बैठ साइकल पहुँच गये थे
फिर आज़ाद भगत दोनों
चूर-चूर करने वाले थे
अंगरेजी किस्मत दोनों

जयगोपाल सतर्क खड़ा था
उसको जहाँ बताया था
थे साण्डर्स-प्रतीक्षारत सब
सबका मन हुलसाया था

ज्यों साण्डर्स निकल कर अपनी
बैठ साइकल मोटर पर
आहिस्ता-आहिस्ता आया
अपने दफ्तर से बाहर

जय का पा संकेत राज ने
गर्दन में गोली दागी
बच जाये न इसी चिन्ता में
चुप कैसे रहता बागी

भगत सिंह ने पाँच गोलियाँ
उसके कन्धे पर सर पर
दाग, भागने का प्रयत्न था
सब का ही अब तो सत्त्वर

सत्त्वर था प्रयत्न चलने का
किन्तु नहीं आसानी थी
जंगल खेत पहाड़ न यह तो
दुश्मन की रजधानी थी

पुलिस अधीक्षक का दफ्तर था
चारों और पुलिस पहरा
घुड़की ही अच्छी खासी तो
हो जाता मानव बहरा

मिस्टर फर्न सिपाही दो ले
उनके पीछे भाग चले
भगत सिंह चूके न तनिक भी
पीछे पिस्टल दाग चले

फर्न लुढ़क कर गिरे धरा पर
शायद वार बचाया था
पुनः उठाया जैसे पिस्टल
शेखर द्रुत चिल्लाया था

'चलो' सुना ज्यों शब्द भगत ने
राज-भगत आगे भागे
दृढ चट्टान सदृश रक्षक थे
शेखर चौकन्ने जागे

रोके राह खड़े थे पथ में
आगत आँधी पानी की
चन्दन आया उड़ा दिया था,
दोनों की निगरानी की

डी० ए० वी० छात्रालय पहुँचे
राज साइकल पर बिठला
भागे शेखर भगत सिंह भी
निज गन्तव्य चले इठला

और सभी साथी संगी जन
सारे भूखे प्यासे थे
पर सारों के मन खुशियों के
अनहद फूल बताशे थे

एक माह पश्चात उसी दिन[7]
बदला था ले लिया गया
सपने में न कल्पना जिसकी
ऐसा उत्तर दिया गया

रवा[8] है बुलबुले शौदा[9] चमन के वास्ते मरना
वतन के वास्ते जीना वतन के वास्ते मरना
वतन से दूर क्या परदेस जाएँ हजरते 'बिस्मिल'
नहीं बेहतर कहीं दो गज़ कफन के वास्ते मरना

खाक[10] होना है मुझे खाक की हस्ती[11] क्या है
चार दिन बाद बतादूंगा के मस्ती क्या है
वो बुलन्दी पे है, आज उनका सितारा है बुलन्द
इससे आगाह[12] नहीं कुछ भी के पस्ती[13] क्या है
नेसती[14] से उन्हें आगाह करो ए बिस्मिल
जो समझते ही नहीं दिल में के हस्ती क्या है

सन्दर्भ/शब्दार्थ

1. वैशाख मई सन् 1928, 2. हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातन्त्र सेना, 3. 9 सितम्बर सन् 1928 को सरदार भगत सिंह ने पार्टी के आदेश पर अपने केश कटा डाले, 4. सहर्ष, 5. मैं घोषणा करता हूँ कि मुझ पर जो चोट पड़ी है वह भारत में अंगरेजी राज के कफन की आखिरी कील साबित होगी (लाला लाजपतराय), 6. 17 नवम्बर सन् 1928 लाला लाजपत राय का स्वर्गवास 7. 17 दिसम्बर सन् 1928 साण्डर्स वध, 8. उपयुक्त, 9. चाहने वाली, 10. धूल, 11. अस्तित्व, 12. जानकार, 13. गिरावट, 14. न होना ।

असेम्बली बम काण्ड : 3

अगले दिन अलस सवेरे ही
परचे चिपके दीवारों पर
गर्वित अंगरेजों के मुख पर
नभ चुम्बी सित[1] मीनारों पर

हिसप्रस का था बक्तव्य छपा
"है क्लीव[2] नहीं हिन्दुस्तानी
जो लाख करोड़ों के नेता
है व्यर्थ न उनकी कुर्बानी

लोहित न जमा, भारत वाले-
निष्प्राण नहीं बतलाते हैं
अपमान नहीं सह पायेंगे,
हम जागे, शस्त्र उठाते हैं,

अत्याचारों को बन्द करो
हो सावधान हम आते हैं
सम्मान राष्ट्र का करने को
शोणित की धार बहाते हैं

आवाज़ क्रान्ति की दबे नहीं
पर्याप्त शस्त्र हम रखते हैं
हँसते-हँसते बलिवेदी पर
चढ़ जाने का दम रखते हैं

हम खेद प्रगट तो करते हैं
कल[3] जिसको स्वर्ग पठाया है
अत्याचारी था, हिंसक था
ऋण माँ का, मार चुकाया है

परचा छपते ही क्रान्ति-ज्वाल
अखबारों की सुर्खियाँ बनी
जन-मानस में सम्मान व्याप्त
पढ़ जन-जन की भृकुटियाँ तनी

अंगरेज त्रस्त था, भयाक्रान्त
भरदी निर्दोषों से कारा
दोषी न पकड़ में आये थे
इसके आगे क्या था चारा

कुछ भाग गये थे इधर-उधर
कुछ शेष बचे थे परवाने
सब रक्षक भगत सिंह के थे
सकुशल उनको बाहर लाने

वारण्ट कटे आशंका से
कलकत्ता थे भगवती चरण
भाभी[4] तब संस्कृत पढ़ती थी
लाहौर रह गयी इस कारण

सुखदेव गये भाभी के घर
संकट का करने समाधान
कलकत्ता मेल सुनिश्चित था
करने को प्रातः ही प्रयाण

वह रूप और लावण्य मुखर-
देखे शरमाये गौरांगी
ऊँची एड़ी के सैंडिल थे
वस्त्राभूषण शत-शत रंगी

सुखदेव उठाये था बोझा
नौकर का रूप मनोहारी
आज़ाद दुपट्टा ओढ़ चले
मथुरा-पंडे, विस्मयकारी

गोदी में शची[5] भगत के था
इस तरह नवेली चलती थी
यह कौन अप्सरा आई है
अनजानी आँख मचलती थी

भ्रम क्रान्तिकारियों का न कहीं
छुक-छुक कलकत्ता मेल चली
पहली श्रेणी के डब्बे में
बैठी दो आभायें उजली

आज़ाद राज पहले उतरे
लखनऊ रेलवे स्टेशन पर
वे उतरे वेटिंग रूम खुला
दे टेलीग्राम दिया सत्त्वर

दुर्गा ने लिखा सुशीला को
सर छज्जूराम सेठ का घर
सब सूत्र पुलिस के बिखर गये
सेनानी सारे अब बाहर

''भाई के संग में आती हूँ
कलकत्ता मेल देख लेना
यह नियत समय पर पहुँचेगा
बालक अठखेल देख लेना''

जा एक दिवस होटल ठहरे
फिर थे महमान सुशीला के
सर छज्जूराम सेठ का घर
पुलकित अरमान सुशीला के

क्या करती अब सी० आई० डी०
सर सेठ बना जब साया हो
तब सभी मनोरथ फलते हैं
जब प्रभु-अनुकम्पा-माया हो

पत्नी लक्ष्मी देवी को थी
सब ज्ञात भगत की दिनचर्या
दूरन्देशी जाने कितनी
दीवाने भी होते क्या-क्या

सप्ताह बाद दूसरी जगह
दोनों ने डाल दिया डेरा
सीखा फणीन्द्र से बम निर्मित-
करना, सुक्रान्ति विस्तृत घेरा

अधिवेशन कांगरेस दल का
मोती अध्यक्ष बने जिसके
सारे भारत के नेता गण
अपने एकत्रित थे जिसके

यह चिनगारी रातों-रातों
सब का सामीप्य प्राप्त करती
सौहार्द अनुभवों से उनके
आगन्तुक कल में रंग भरती

सेनानी वहाँ सुभाष मिले
कुछ नूतन ही निर्माण किया
जिस दिन साण्डर्स हुआ वध था
टुक भगतसिंह का ध्यान किया

खुद वेश बदलकर बने भगत
चालान पुलिस से करवाया
साईकल पर चढ़ गलत हाथ
जुरमाना करवा, भरवाया

सहमत न हुए थे भगत सिंह
यह एक अचूक गवाही थी
उसका तो था पर लक्ष्य और
कब नीति भीति यह चाही थी

थी वीर जवाहर की सहमति
पर भगत नहीं यह माने थे
योगेश[6] गांगुली[7] से साथी
रक्ताभ भृकुटियाँ ताने थे

जब पढ़े नेशनल कालिज में
वह पाठ स्मरण था वेलाँ का
कुछ भी न और कुछ याद रहा
उसको ही उत्तर में टाँका

गांगुली रिवाल्वर लाये थे
दे भगतसिंह को प्यार किया
अपने दल से जो हो सकता
आश्वस्त किया उपहार दिया

निज उँगली काट सुशीला ने
हरि[8] माथे तिलक लगाया था
ज्यों भगिनी युद्ध स्थल जाते-
भाई-सम्बन्ध निभाया था

कुछ बम भी साथ ले लिये थे
आगरा हींग की मण्डी आ
उद्योग सदृश आरम्भ कार्य
होती थी निशिदिन बम रचना

दिल्ली लाहौर सहारनपुर
ऐसे उद्योग लगाये थे
सब अलग-अलग पर एक सूत्र
उद्देश्य अभिन्न बनाये थे

प्रस्थान आगरा से दिल्ली
दिल्ली भारत की रजधानी
रजधानी में ही नवयुवकों-
ने विजय पताका फहरानी

आये दिल्ली तो क्रान्ति शिखाओं-
की दिल्ली में टोली थी
यह नहीं रक्त की, उद्देश्यों-
की यहाँ खेलनी होली थी

‘हिसप्रस’ ने स्वीकृति देदी थी
“जमकर के होली खिलने दो
जो छाले हैं मदहोश हृदय-
जूझो, वे छाले छिलने दो”

आजाद चाहते थे पर यह
बम को फेंकों बाहर आओ
सारे प्रबन्ध मैं कर दूँगा
तुम स्वयं नहीं पकड़े जाओ

‘हिसप्रस’ तो यह भी चाह रही
बम नही फेंकने हरि जायें
दल को आवश्यकता जिसकी
ऐसे बिरवे क्यों मुरझायें

हरि का ही हो संकल्प जहाँ
कैसे विचार ये मनधारे
भारत पर रक्त चढ़ा कर के
लाने थे उसको उजियारे

साथ लगाया बटुकेश्वर को
दोनो मिलकर साथ चलेंगे
माता की पूजा की खातिर
एक नहीं दो दीप जलेंगे

तारीख सात अप्रैल माह
सन उनत्तीस का अरुण उदय
लाहौर भगवती चरण खड़े
सुखदेव रो रहे पीड़ा मय

वचनों से, बोले ''अन्त समय
आओ टुक भगत निहारो तुम
बटुकेश्वर दत्त साथ उनके
आशीष हृदय-निधि वारो तुम

भाभी शचीन्द्र को संग लेलो
बालक गोदी में खेला है
जी भर कर हो समीप देखो
यह तो बिछुड़न की बेला है

मेला है कुछ दिवसों का ही
सम्पत्ति देश की होने में
कितना सुख, कितनी अतुल भक्ति
इस पाने में, इस खोने में''

दीदी भी छुट्टी आई थी
वह भी चलदी थी साथ-साथ
अपना भाई आखिरी विदा
उन्नत कर देने देश-माथ

लौटेंगे अब न कभी मुड़कर
वे क्या ? सारे ही जान रहे
'हिसप्रस' की यह योजना कहाँ-
कैसी होगी पहचान रहे

कुछ अलग-अलग कुछ पास-पास
जुड़-जुड़ कर बिखरे खड़े हुए
गंगा- यमुना के आँगन में
जैसे कुछ बेड़े पड़े हुए

सबके ओठों पर शब्द नहीं
दृग बूँद नहीं थी पानी की
कीमत क्या आँक सके कोई
इस उठती हुई जवानी की

निश्चित होने पर भेज दिया
सब को ही दिल्ली से बाहर
जय देव ओर शिव वर्मा ही
इनकी रक्षा में थे तत्पर

सुखदेव नहीं माने जाकर
भाभी भाई को ले आये
था हुक्म न दिल्ली रहने का
दीदी भी साथ-साथ लाये

इनको बिठलाकर कहा-"रुको
आता है अभी भगत भाई"
फिर चले गये लेकर आये
आगे थी उज्ज्वल तरुणाई

खाकी नेकर, खाकी कमीज़
स्काउट की यह वर्दी पहने
आँखों की भाषा मचल उठी
जाने सुनने, जाने कहने

रसगुल्ले और सन्तरों के
बेहद शौकीन भगत भैया
सिंहासन पर आजादी के
अब थे आसीन भगत भैया

मेला ही क्षण दो क्षण का यह
क्षण हँसी खुशी क्षण चहल पहल
क्यों मन मैला, आँखें उदास
जाने दो क्षणभर हृदय बहल

सन्तरे चूस रसगुल्लों का
नम्बर आया, भर गया उदर
हँस खुश खिलकर बोले डोले
अब होता है आरम्भ सफर

अक्षत रोली से तिलक किया
पहले भाभी फिर दीदी ने
यह कौन जानता जाते हैं
जाने मरने, जाने जीने

यह अवसर ऐसा अवसर है
माँगे से कब मिल पाता है
जो कूद गया उस पार हुआ
जो खड़ा रहा पछताता है

जयदेव चले दोनों को ले
बम लिपटे थे अखबारों में
आने जाने की आदत थी
पहले ही इन दरबारों में

परचे जेबों में नेकर की
जैसे जाते दो सूर्य बाल
कंठाप्लावित गुनगुन के स्वर
अद्भुत मस्तानी द्विरद[9] चाल

गैलरी भवन की क्या कहने
उनको बिठलाया यथा स्थान
चहुँ और न सन्देहों का डर
नीचे को झिलमिल दृग-वितान

शुस्टर, सर जार्ज, साइमन तो
पण्डित जी, मोती लाल वहाँ
थे जिन्ना, मालवीय जैसे
भारत के अनगिन लाल वहाँ

उठ भगत सिंह ने त्वरित वेग
बम सबके पीछे को डाला
हत्या न किसी की हो जाये
ऐसा था अन्तर उजियाला

सब सहम गये, संभले न तभी
था शीघ्र दूसरा दाग दिया
पिस्तौल खींच, दो फायर कर
परचे फेंके जय नाद किया

नारों से गुंजित भवन-भुवन
दोनों ने बोले साथ-साथ
जय इन्कलाब साम्राज्यवाद-
भागे, हाथों में रहा हाथ

ज्यों फ्रांस गैलरी में वेलाँ-
बोले, बोले उस समय भगत
दोनों हो निर्भय खड़े रहे
अब कहाँ बचे थे अभ्यागत

पण्डित जी, जिन्ना, मालवीय
थे तो बस ऐसे नेता थे
पहचान गये थे सब इनको
युग के ये प्रबल विजेता थे

अवसर था चाह अगर होती
जाते ये भाग सरलता से,
ये पहरेदार हिमालय के
खुद खेल रहे असरलता से

अप्रैल महीना गर्मी का
सन उनत्तीस का आठ दिवस[10]
जब असेम्बली में बम डाले
अंगरेजों को कर दिया विवश

जो इनको आकर के पकड़े
हिम्मत न पड़ी दरबानों की
खुद हाथ उठाये थे ऊपर
यह आन बान परवानों की

फिर केस चला कारागृह में
तारीख जून की बारह[11] थी
आजीवन कारावास दिया
शासन की इच्छा दुर्वह थी

दिल्ली से ले लाहौर चले
दी भगत मियां वाली कारा
चल किशन सिंह भी साथ रहे
मिल लेने का अवसर प्यारा

दस दिवस जुलाई का आया
परिचालित था साण्डर्स-केस
अनशन चल रहा निरन्तर था
स्ट्रेचर पर लाते थे विशेष

जय गीत अदालत में गाते
अफसर होते थे बहुत खफा
जालिम अंगरेज भगा देंगे
कब कैसे किसको यहाँ वफ़ा

अनशन था जून दिवस पन्द्रह
अनवरत चल रहा जन उदास
तेरह दिन नौवाँ मास हुए
शहीद थे यतीन्द्रनाथ दास[12]

था समझ उठा सारा भारत
बच्चा-बच्चा ललकार उठा
लन्दन का यह रहने वाला
रणचण्डी स्वयं पुकार उठा

तूफान उमड़ता आता था
अंगरेजी शासन डूबेगा
जो मार पालती बैठ गया
लो अब दु:शासन डूबेगा

वे जलते, दाँत पीसते वे-
लहराते स्वर निज मंजिल के
कर कर बुलन्द अपना नारा
सब हाल बताते थे दिलके

उरूजे[13] कामयाबी पर कभी हिन्दोस्तां होगा
रिहा[14] सैयाद[15] के हाथों से अपना आशियां होगा

चखाएंगे मजा बरबादिए गुलशन का गुलची[16] को
बहार आ जाएगी उस दिन जब अपना बागवां[17] होगा

वतन की आबरू[18] का पास[19] देखें कौन करता है
सुना हैं आज मकतल[20] में हमारा इम्तिहां होगा

जुदा मत हो मेरे पहलू से ए दर्देवतन हरगिज़
न जाने बाद मुर्दन[21] मैं कहाँ और तू कहाँ होगा

यह आये दिन की छेड़ अच्छी नहीं ऐ खन्जरे कातिल
बता कब फैसला उनके हमारे दरमियां होगा

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
बतन पर मरने वालों का यही नामो निशां होगा

कभी वह दिन भी आयेगा कि जब स्वराज देखेंगे
जब अपनी ही जमीं होगी और अपना आसमां होगा

सन्दर्भ/शब्दार्थ

1. श्वेत, 2. कायर, 3. 17 दिसम्बर 1928, 4. दुर्गा देवी, भगवतीचरण की पत्नी, 5. भगवती चरण बोहरा का पुत्र, 6. योगेशचन्द्र चटर्जी, 7. प्रतुलचन्द्र गांगुली, 8. यहाँ भगत सिंह का नाम हरि था, 9.हाथी, 10. 8 अप्रैल सन् 1929, असेम्बली में बम फेंके, दो फायर किये, परचे फेंके, 11. 12 जून सन् 1929, जेल में केस चला, भगत को आजीवन कारावास, 12. 13 सितम्बर सन् 1929 को यतीन्द्रनाथ दास अनशन से जेल में शहीद हुए । 13. उत्त्थान, 14. छूट जाना, 15. शिकारी, 16. फूल तोड़ने वाला, 17. माली, 18. मान, 19. लिहाज, 20. हत्यास्थल, 21. मरना ।

कारा : 4

जस्टिस एडीसन और फोर्ट
लाहौर कोर्ट के सेशन जज
करदी अपील, था केस चला
पूरा शासन लेकिन निर्लज

तेरह जनवरी तीस सन को
आदेश किया पिछला बहाल
बटुकेश्वर और भगत दोनों
आजीवन कारा से निहाल

श्रीकृष्ण अदालत में आते
साण्डर्स केस की सुनवाई
पहले नारे फिर नज्मों से
वे करते शासन-अगुवाई

नब्बे नब्बे सौ-सौ दिन के-
भूखे, हड़ताल सुधारवाद
जो कैद विचाराधीन वहाँ
उनकी दिनचर्या पर विवाद

आते ही कहते इन्कलाब
फिर जिन्दाबाद गगन चुम्बी
श्रीकृष्ण क्रूर था मजिस्ट्रेट
ज्वाला बन जाता था दम्भी

यह क्या होता ? इसको रोको
पिटवाता पहरेदारों से
भारत माँ यों ही पराधीन
कुछ ऐसे ही गद्दारों से

भर छल प्रपंच साण्डर्स-केस
सेशन को भेज दिया उसने
झूठा सच्चा सब कुछ लिखकर
शासन सन्तुष्ट किया उसने

बाहर व्याकुल थे किशन सिंह
नूतन वकील, नूतन सलाह
अर्जुन खामोश नहीं बैठे
थे देख रहे यह क्या गुनाह

थी एक मई सन तीस किया
इरविन ने आर्डिनेन्स जारी
दो गोरों के संग मुसलमान
त्रय, केस ट्रिब्यूनल तैयारी

सर टेकचन्द बख्शी ने पढ़
विद्वान ट्रिब्यूनल रच डाला
धीरे से किशन सिंह को भी
कह दिया कि ज्यों अमृत-प्याला

''ऐसा जम्बूड़ फँसाया है
फाँसी न भगत को हो पाये
आगा़ हैदर को साथ लगा
दो इंग्लिशतानी उलझाये

यह न्यायपूर्ण कर्तव्यों से
क्षण सकता है मुख मोड़ नहीं
यदि न्याय किया तो भगत सिंह
फाँसी से सकता जोड़ नहीं

निश्ंचित रहो सुख से सोओ
करना है उचित परिश्रम भी
अविरल प्रकाश की धारा में
बहते रहते हैं तम भ्रम भी''

इजलास लगा बन्दी आये
क्रम वही चला प्रतिदिन वाला
आते ही इन्कलाब के स्वर
गाना जिसमें ज्योतिर्ज्वाला

सरफरोशी[1] की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है

रहरवे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में
लज्जते सहरा नवरदी दूरिये मंजिल में है

वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आस्मां
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है

आके मकतल[2] में यह कातिल कह रहा है बार-बार
क्या तमन्ना ए शहादत भी किसी के दिल में है

ए शहीदे मुल्को मिल्लत तेरे जज्बों पर निसार
तेरी कुर्बानी का चर्चा गैर की महफिल में है

अब न अगले बलबले हैं और न अरमानों की भीड़
एक मिटजाने की हसरत अब दिले 'बिस्मिल' में है

आग़ा हैदर जी० सी० हिल्टन
दो जस्टिस सदस्य थे भारी
कोल्डस्ट्रीम मुख्य थे उनमें
बना ट्रिब्यूनल था अधिकारी

इस समय वहाँ कारागृह में
थे बटुक भगत सुख राज विजय
जयदेव कमल आशा कुन्दन
शिव वर्मा गया सुरेन्द्र अजय

था देश प्रेम अद्भुत जितेन्द्र
रखवाले माँ के महावीर
थे एक किशोरीलाल नहीं
जाने कितने[3] सुन मन अधीर

मुखविर बन गये सात[4] उनका
क्या नाम बताऊँ मैं तुमको
जयचन्द विभीषण कौन-कौन
क्या हृदय दिखाऊँ मैं तुमको

कोल्डस्ट्रीम कुद्ध थे कितने
ऐसा दृश्य नहीं देखा था
पहले नारे फिर नज्में थीं
यह सबकुछ ही अनदेखा था

श्रीकृष्ण अदालत मजिस्ट्रेट
तैयार कर रहा था न केस
त्रय न्यायाधीश विराजमान
निर्णय दे देने को विशेष

वे न्याय-तुला के रक्षक थे
आगे था उनके संविधान
पय का पय, पानी का पानी
उनकी अकाट्य आज्ञा प्रमाण

बारह मई तीस का सन् था
वह ही लातों घूसों का क्रम
आगा हैदर कुर्सी से उठ
यह दृश्य देखने में अक्षम-

बाहर जाने को उद्यत थे
कोल्डस्ट्रीम विनय कर डाली
मुँह पर रख अखवार छुपाया
क्रुद्ध बहुत आँखों में लाली

भरी अदालत के विरुद्ध था
बन्दी को दण्डित कर देना
न्यायविदों के आगे दोषी
को यों अपमानित कर देना

खत्म अदालत नोट लिखा था
जिसमें दुर्व्यवहार बताया
सहमत हुए न आग़ाहैदर
जिससे सत्य उभर कर आया

तेरह के पश्चात अदालत
नहीं गया कोई सेनानी
उनके बिना कार्य संचालन
चल न सकी कोई मनमानी

आग़ा हैदर पुलिस-तर्क को
निज तर्कों से खण्डित करते
उन्हें न, भीषण अपराधों से
शासन महिमा मण्डित करते

आगा हैदर के जीते जी
केस नहीं यह चल पायेगा
भगत सिंह को नहीं कभी भी
फाँसी का अवसर आयेगा

कार्य चल रहा नहीं यथोचित
कोल्डस्ट्रीम बहुत घबराये
सरकारी वकील थे मिस्टर
कार्डन नॉट गये बुलवाये

जैसे समझाया था उनको
पहुँच गये आग़ा हैदर घर
किया निवेदन-"आप मुकदमा
यह पूरा हो जाने दें सर

कोल्डस्ट्रीम नहीं कहते यह
मेरी तो है ही क्या हिम्मत
मिस्टर जी० सी० हिल्टन जस्टिस
उनका जान नहीं पाया मत

आया कुछ आफर दे देने
मैं तो केवल उनका नौकर
ऊँचे और वायसराय की
कैविनेट के ऊँचे मैम्बर

अगर आप चाहेंगे तो, प्रिवि-
कौंसिल के जज सबसे आला
किन्तु केस को चल लेने दें
नहीं करें कुछ गडवड़झाला

इससे भी आगे कुछ हो तो
होने का इंगितभर दे दें
इच्छापर सबकुछ निर्भर है
अपनी स्वीकृति का स्वर दे दें"

खून खौल उट्ठा इतना सुन
क्रोधित चेहरा लाल हो गया
हिम आच्छादित नील समन्दर
ज्वालामुखी कराल हो गया

कहा गरज कर के नौकर से
"हमको यह क्या कौन मानता
न्यायाधीशों से कैसे बोला
जाता यह नहीं जानता

कान पकड़ कर इसे निकालो
बाहर का रस्ता दिखला दो
क्या तहजीब हुआ करती है
इसको करना बात सिखा दो"

तेरह के पश्चात अदालत
नहीं गया कोई सेनानी
उनके बिना कार्य संचालन
चल न सकी कोई मनमानी

आग़ा हैदर पुलिस-तर्क को
निज तर्कों से खण्डित करते
उन्हें न, भीषण अपराधों से
शासन महिमा मण्डित करते

आगा हैदर के जीते जी
केस नहीं यह चल पायेगा
भगत सिंह को नहीं कभी भी
फाँसी का अवसर आयेगा

कार्य चल रहा नहीं यथोचित
कोल्डस्ट्रीम बहुत घबराये
सरकारी वकील थे मिस्टर
कार्डन नॉट गये बुलवाये

जैसे समझाया था उनको
पहुँच गये आग़ा हैदर घर
किया निवेदन-''आप मुकदमा
यह पूरा हो जाने दें सर

कोल्डस्ट्रीम नहीं कहते यह
मेरी तो है ही क्या हिम्मत
मिस्टर जी० सी० हिल्टन जस्टिस
उनका जान नहीं पाया मत

आया कुछ आफर दे देने
मैं तो केवल उनका नौकर
ऊँचे और वायसराय की
कैविनेट के ऊँचे मैम्बर

अगर आप चाहेंगे तो, प्रिवि-
कौंसिल के जज सबसे आला
किन्तु केस को चल लेने दें
नहीं करें कुछ गडवड़झाला

इससे भी आगे कुछ हो तो
होने का इंगितभर दे दें
इच्छापर सबकुछ निर्भर है
अपनी स्वीकृति का स्वर दे दें"

खून खौल उट्ठा इतना सुन
क्रोधित चेहरा लाल हो गया
हिम आच्छादित नील समन्दर
ज्वालामुखी कराल हो गया

कहा गरज कर के नौकर से
"हमको यह क्या कौन मानता
न्यायाधीशों से कैसे बोला
जाता यह नहीं जानता

कान पकड़ कर इसे निकालो
बाहर का रस्ता दिखला दो
क्या तहजीब हुआ करती है
इसको करना बात सिखा दो"

हैदर ने बतलाया था सर-
शादीलाल चीफ़ जस्टिस से
गया वायसराय को सबकुछ
कार्डन नॉट कहाँ कम किससे

भारत में खलबली मची थी
आग़ा हैदर के नारे थे
चिन्ता में अंगरेज पड़े थे
बड़ी मुसीबत के मारे थे

बदला गया ट्रिब्यूनल अब तो
कैदी जन का बना बहाना
जिसे बदल कर पूरा होना
अंगरेजों का ताना-बाना

भगत सिंह क्या साथी संगी
समझ रहे अंगरेजी चालें
जितने हैं ऊपर से गोरे
उतने ही भीतर से काले

नहीं कमी थी उत्साहों में
धीरज-धन बढ़ता जाता था
गीतों से अरमान फूटते
शोणित में उबाल आता था

इलाही खैर वो हरदम नई बेदाद[5] करते हैं
हमें तुहमत लगाते हैं जो हम फरियाद करते हैं

कभी आजार[6] देते हैं कभी बेदाद करते हैं
मगर इसपर भी सौ जी से हम उनको याद करते हैं

असीराने कफस[7] से काश ये सैयाद[8] कह देता
रहो आजार होकर हम तुम्हे आजाद करते हैं

रहा करता है अहले गम को क्या-क्या इंतिजार उसका
कि देखें वो दिले नाशाद[9] को कब याद करते हैं

यह कह कह कर बसर की उम्र हमने कैदे उल्फत[10] में
वो अब आज़ाद करते हैं वो अब आजाद करते हैं

सितम[11] ऐसा नहीं देखा जफ़ा[12] ऐसी नहीं देखी
वो चुप रहने को कहते है जो हम फरियाद करते है

यह बात अच्छी नहीं होती यह बात अच्छी नहीं करते
हमें बेकस समझकर आप क्यों बरबाद करते है

कोई बिस्मिल[13] बनाता है जो मकतल में हमें बिस्मिल
तो हम डरकर दबी आवाज़ से फरियाद करते हैं

सन्दर्भ/शब्दार्थ

1. सर कटाना, 2. कत्ल करने की जगह, 3. भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त, सुखदेव, राजगुरु, विजय कुमार सिन्हा, जयदेव, कमलनाथ तिवारी, आशाराम, कुन्दन लाल, शिव वर्मा, गया प्रसाद, सुरेन्द्र पाण्डे, अजय घोष, देश राज, प्रेम दत्त, जितेन्द्र सान्याल, महावीर सिंह, किशोरी लाल, कुल अट्ठारह 4. ललित कुमार मुकर्जी, मनमोहन मुकर्जी, ब्रह्मदत्त, रामशरण दास, हंसराज वोहरा, फणीन्द्र नाथ घोष, जय गोपाल (कुल सात) 5. अत्याचार, 6. सताना, 7. पिंजरे का बन्दी, 8. शिकारी, 9. अप्रसन्न, 10. मुहब्बत की कैद, 11-12. अत्याचार, 13. गला काटना

जल्लादी निर्णय : 5

बनी अदालत, नई अदालत
हैदर से था पीछा छूटा
शासन की बेईमानी से
सारी जनता का दिल टूटा

जी० सी० हिल्टन किये प्रमुख थे
उनको था अध्यक्ष बनाया
जे० के० टेप सदस्य साथ में
अब्दुल कादिर को लगवाया

किन्तु भगत पहचान गये थे
राजी नहीं अदालत जाने
हिल्टन माफी माँगे पहले
बाकी झूठे सभी बहाने

लज्जित थी सरकार पूर्व ही
अभियुक्तों की एक न मानी
वे न अदालत में आए फिर
एक तरफ ही चली कहानी

तेरह मई तीस थी जिस दिन
गए अदालत में सेनानी
फिर छब्बीस अगस्त गया आ
पटाक्षेप की लिए निशानी

अगले दिन आदेश दिया था
अभियुक्तों को गया सुनाया
निज बचाव में जो भी कहना-
करना, कर लो अवसर आया

कर इन्कार दिया था सबने
समझ गये थे उनकी चालें
यह कानूनी पक्षमात्र है
बैठे सब काले दिल वाले

काले दिल वालों पर कोई
रंग नहीं है चढ़ने वाला
जो होना हो गया वहाँ पर
धधक रही सबके उर-ज्वाला

बाजीगर का खेल चल रहा
जिसे हराना वह हारेगा
अटल सत्य निश्चय था सबका
भगत सिंह जीवन वारेगा

सोलह अगले माह सितम्बर
झूम रहा था वह मस्ताना
समझा उचित तसल्ली देना
समाचार घर पर भिजवाना

लिखा पत्र कुलवीर सिंह को
जो छोटे भाई थे प्यारे
विद्या की आँखों के तारे
भारत माँ के राजदुलारे

''मुलाकात कम हुई जेल में
ठीक नहीं नीयत सरकारी
निर्णय शीघ्र सुनाया जाये
ऐसी कुछ लगती तैयारी

बाद फैसले के फौरन ही
सैण्ट्रल जेल बदल दी जाये
ऐसा भी अन्देशा मुझको
तुम को खबर नहीं लग पाये

मेरी पुस्तक कागज कपड़े
ले जाना तुम कारा आकर
यहाँ उपाधीक्षक को दूँगा
आगे का सब हाल बताकर

इस सप्ताह माह इस ही में
निर्णय होगा यह ख्याल है
होगा मिलन दूसरी कारा
कहता मेरा मन-मराल[1] है

ज्ञान प्रिवीकौंसिल का लेना
भेजो तुम वकील को मेरे
माता जी को समझा देना
रहे न उनको चिन्ता घेरे''

भेजा खत खत मिला उन्हें तो
माता को ले मिलने आये
पहरा कठिन, कठिन आज्ञा थी
दर्श नहीं पलभर कर पाये

होने को मालूम हुआ था
भगत सिंह ने खेद मनाया
लिखा पत्र पच्चीस दिवस फिर
पुनः पुनः उनको समझाया

''मुझे हुआ मालूम यहाँ तुम
माता को संग में लाये थे
आज्ञा बिना निराश किया था
बिना मिलाये लौटाये थे

पहले ही मालूम तुम्हें तो
मिलने की है नहीं इज़ाज़त
फिर माता को क्यों ले आये
उनको करना परेशान मत

जब वे रोयें उनसे कहना
''तेरा भगत सिंह रो देगा
जो हरदम हँसता रहता है
सारा ही सम्बल खो देगा

उनसे कहना होना ही है
होगा ही नुकसान जरूरी
एक अकेले नहीं अनेकों
के संग है ऐसी मजबूरी

जाने कितने हैं दुनिया में
जो मुझसा सम्बल खोते हैं
कबतक धीर न बँधती उनकी
कबतक फूट-फूट रोते हैं

एक साल तक मुलाकात ही-
मुलाकात क्या जी न भरा है ?
हुई नहीं दो एक भला तो
क्यों दिल का छाला उभरा है ?

मेरा है अनुमान फैसला-
होते ही चालान जरूरी
फिर न सामने आ पायेगी
मुलाकात में यह मजबूरी

फिर भी मुलाकात की आज्ञा
नहीं मिले तो मन रख लेना
घबराने की बात नहीं है
भारत माँ का प्रण रख लेना''

खत भेजा मिल गया उन्हें था
''तेरा भगत सिंह रो देगा''
माता को कुलबीर कह रहे
''वह अपना सम्बल खो देगा''

''वह क्या रो देगा, रो देगा
सावन, चमन-चमन रो देगा
बेचारी धरती रो देगी
सारा नील गगन रो देगा

तेरी एक बूँद आँसू की
अडिग हिमालय डिग जायेगा
तेरी भारत माँ का आँचल
आँधी पानी भर लायेगा

माँ हम तेरे एक नहीं हैं
तीस करोड़ बाल हैं तेरे
अरुणाई तेरी आँखों में
देख रहे हैं स्वर्ण सवेरे''

किशन सिंह क्या देश समूचा
इन घटनाओं से पागल था
भारत माँ के बच्चे-बच्चे
का दिल आहत था, घायल था

अक्टूबर की रात, पाँच को
एक अनूठा दृश्य उपस्थित
कारागृह में रात्रिभोज था
अफसर जिसमें हुए सम्मिलित

गानों पर गाने तबलों पर
ताल लगाते थे दीवाने
विस्मिल के स्वर उड़े दूर तक
''याद वतन आई समझाने''

अफसर अभियुक्तों में कितनी
हमदर्दी थी क्या बतलाऊँ ?
आँखों-आँखों उच्छल कैसे-
स्नेह-सिन्धु का ज्वार दिखाऊँ ?

नहीं आजतक गया मनाया
ऐसा अद्‌भूत दिन कारा में
गोरे ज्यों सम्मिलित हुए हों
आजादी की इस धारा में

अगले[2] दिन आश्चर्य चकित सब
पहरा लगा हुआ था भारी
सावधान की मुद्रा में सब
एक अनोखी सी तैयारी

अड़सठ पृष्ठ भरे थे जिसके
लिये फैसला दूत खड़ा था
सुबह-सुबह ही दुश्मन बनकर
ज्यों कोई यमदूत खड़ा था

भगत सिंह सुखदेव राजगुरु
फाँसी दण्ड दिया घन घोरी
कमल, विजय, जयदेव, गया, शिव
महावीर तो लाल किशोरी

इन सातों को सजा[3] सुनाई
भेज दिया था कालापानी
कुन्दन सात, तीन प्रेम दत्त
छोड़ दिये बाकी अभिमानी

गुप्त फैसला था पर सारी
खबर देश में फैल गई थी
अक्टूबर तारीख आठ को
क्रान्ति-शिखायें नहीं नई थीं

अखवारों का पन्ना-पन्ना
रंगा हुआ, थी स्याह लकीरें
भगत सिंह, सुख, राज आदि की
रंग विरंगी थी तस्वीरें

दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को

हम भी आराम उठा सकते थे घर, पर रहकर
हमको भी पाला था माँ बाप ने दुख सब सहकर
बख्ते रुखसत उन्हें इतना भी न आए कहकर
गोद में आँसू कभी टपके जो रुख[4] से बह कर
तिफ्ल[5] उनको ही समझ लेना जी बहलाने को

देश सेवा का ही बहता है लहू[6] नस-नस में
अब तो खा बैठे है चित्तोड़ के गढ़ की कसमें
सरफरोशी की अदा होती हैं यूं ही रस्में
भाई खंजर के गले मिलते हैं सब आपस में
बहनें तैयार चिताओं पे हैं जल जाने को

नौजवानो जो तबीयत में तुम्हारे खटके
याद कर लेना कभी हमको भी भूले भटके
आपके अज़्बे[7] बतन होवें जुदा कट-कट के
और सर चाक हो माता का कलेजा फटके
पर न माथे पे शिकन आए कसम खाने को

अपनी किस्मत में अजल[8] से ही सितम[9] रक्खा था
रंज[10] रक्खा था मुहिम[11] रक्खी थी, गम[12] रक्खा था
किसको परवाह थी और किसमें यह दम रक्खा था
हमने जब वादिए गुरबत में कदम रक्खा था
दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को

अपना कुछ ग़म ही नहीं पर यह खयाल आता है
मादरे हिन्द से कबतक यह जबाल[13] आता है
देश आज़ादी का कब हिन्द में साल आता है
कौम अपनी पे तो रह रह के मलाल[14] आता है
मुन्तजिर[15] रहते हैं हम खाक में मिल जाने को

सन्दर्भ/शब्दार्थ

1. हंस, 2. 6 अक्टूबर 1930, 3. भगत सिंह, सुखदेव, राज गुरु को फाँसी की सजा, कमल नाथ तिवारी, विजय कुमार सिन्हा, जयदेव कपूर, गया प्रसाद, शिव वर्मा, महावीर सिंह, किशोरी लाल, इन सातों को कालापानी की सजा, कुन्दन लाल को सात साल और प्रेमदत्त को तीन साल की सजा 4. मुख, 5. बच्चा, 6. रक्त, 7. अंग, 8. अनादिकाल, 9. अत्याचार, 10-12. दुख यात्रा, 13. पतन, 14. दुख, 15. प्रतीक्षा रत,

महाप्रयाण : 6

प्राणनाथ कारा में पहुँचे
भगत सिंह से बहुत कहा
वे तैयार कहाँ हो पाते
तीनों का गुट एक रहा

कहाँ प्रार्थना रहम कहाँ का
भीख न लेते दीवाने
भारत माँ की आन बान हित
प्राण जलाते परवाने

हम विद्रोही हैं, बागी हैं
युद्ध रहेगा ही जारी
माँग भेज दी थी पहले ही
तीनों ने कर तैयारी

''युद्ध बन्दियों जैसा ही-
व्यवहार किया जाये हमसे
उड़ा दिया गोली से जाये
भूल न हो जाये भ्रम से''

वीर शहीदों की ऐसी ही
दया प्रार्थना होती है
प्राण निछावर करती दुनिया
आँख न आँसू बोती है

काल कोठरी निर्मम जेलों-
की अद्‌भुत तनहाई थी
लिखते पढ़ते भगत सिंह ने
पुस्तक चार रचाई थीं

देश विदेशों छपीं पुस्तकों-
में मन को बहला उठते
अपने मित्रों की रचनायें
झूम-झूम कर गा उठते

मेरा रंग दे बसन्ती चोला
जिसे पहन कर वीर शिवा ने
माँ का बन्धन खोला
मेरा रंग दे बसन्ती चोला

यह चोला टीपू ने पहना हँसकर दी कुर्बानी
इसे पहन झाँसी की रानी खूब लड़ी मर्दानी
पहन इसे मेवाड़ का राणा जय-जय भारत बोला
मेरा रंग दे बसन्ती चोला

तीन मार्च[1] को मिले भगत जब
अपने घर के मित्रों से
क्या करते कुलतार नियन्त्रण-
रहा न आँसू अपनों से

भगत सिंह पर जो मरते थे
अर्पित कर निज प्राणों को
क्षण प्रतिक्षण उनकी चिन्ता में
होम दिया अरमानों को

हूक उठी भर आँख रो दिये
अन्तिम घड़ी विदाई थी
माता पिता अन्य सब दादा
की अन्तिम परछाई थी

मिलकर गये, तभी लिख डाला
निज कुलतार अनुज को खत
"मैंने कितनी बार कहा है
मेरे भैया रोना मत

वीर बहादुर के बच्चे तुम
हिम्मत से पढ़ना लिखना
रीत गये मेरे अभाव में
पर तुम भरे भरे दिखना

मन मैला-मैला सा देखा
दर्द तुम्हारा सहन नहीं
माता पर, भारत माता पर
दुख का आये ग्रहण नही

उसे फिक्र[2] है हरदम नया तर्जे[3] जफा[4] क्या है
हमें यह शौक देखें सितम की इन्तहाँ[5] क्या है
दहर[6] से क्यों खफा[7] रहें चर्ख[8] का क्यों गिला[9] करें
सारा जहां अदू[10] सही आओ मुकाबला करें
कोई दम का महमां हूँ ऐ अहले[11] महफिल[12]
चरागे सहर[13] हूँ बुझा चाहता हूँ
मेरी हया[14] में रहेगी खयाल की बिजली
यह मुश्ते[15] खाक[16] है फानी[17] रहे-रहे न रहे
अच्छा रुखसत[18]
खुश रहो अहले वतन[19] हमतो सफर करते हैं"

अर्जुन सिंह कितनें अधीर थे
कोई दादा होये ना
पोते के अभाव में ईश्वर !
कोई आँख भिगोये ना

बार-बार आ पास भगत के
बोले, बोल नहीं निकले
बल दे ओठ नहीं खुल पाये
आँखें भरीं भरीं विकले

वरद हस्त धर शीश भगत के
लाख-लाख आशीष दिये
अगले पिछले पुण्य भगत पर
न्यौछावर सौ बार किये

भगत सिंह ने अलग-अलग ही
सब से वार्तालाप किया
विद्या माँ के चरण स्पर्श कर
उनका आशीर्वाद लिया

और कहा था " बेबेजी अब
दादा और न जी पायें
बंगा जाकर पास रहो तुम
अपना मन मत हलकायें

लाश न लेने तुम आना
कुलवीर सिंह ले जायेगा
भगतसिंह की माँ रोई तो
जगत नहीं सह पायेगा''

इतना कह हँस पड़े जोर से
हँसा हिमालय हो जैसे
सभी जेल वाले विस्मित थे
दीवाने होते कैसे

वातावरण जेल का इतना
गीला कभी न हो पाया
जैसे मिलकर गीत शान्ति का
फूलों पातों ने गाया

यह तेईस मार्च की बेला
इकत्तीस सन बोझीला
आगे देख ट्रिब्यून पढ़ा क्या ?
मन मस्तिष्क हुआ ढीला

भेजा वार्डर प्राणनाथ के-
द्वारा परिचय मँगवाया
परिचय मात्र न था लेनिन का
लेनिन स्वयं चला आया।

दोनों ऐसे विद्रोही-
साम्राज्यवाद के दुश्मन मिल-
इन्कलाब का नारा गुंजित
करने आकुल विश्व अखिल

अन्तिम दिन था, अन्तिम क्षण थे
चलती फिरती साँसों के
घुलमिल एक हो रहे जैसे
दो पंछी विश्वासों के

नाम मौत का सुनते ही जन
हो अधीर सुधि खो जाते
ऋण से उऋण मान कुछ ऐसे
भी जो पुलकित हो जाते

कार्य देश हित करते-करते
काम आ गया यदि जीवन
उस जीवन से बड़ा नहीं-
होता है कोई स्वर्ग-सदन

हलका-हलका मुदित-मुदित सा
भगत सिंह का आँचल था
उसके आगे मिलने वाला
मनचाहा इच्छित फल था

चौदह नम्बर की बैरक से
परचा आया था रुचिकर
"अभी वक्त है तुम्हें बचाया
जासकता दो स्वीकृति भर"

"मेरा बचना इन्कलाब को
भारत के मरना होगा
जीकर क्या, मरकर आदर्शों-
को ऊँचा करना होगा

जो कुछ करने की हसरत थी
क्या हजारवाँ भाग किया ?
जीता तो दिखलाता कुछ कर
क्या होता है क्रान्ति-दिया ?

मुझको है अभिमान देश पर
अपना शीश चढ़ाने का
यारो! मिले तुम्हें भी मौका
पास हमारे आने का''

भर दोपहरी सूर्य शीश पर
सब कैदी रहते बाहर
ऐसे में आदेश आ गया
''भीतर सब जाओ सत्वर''

चतर सिंह था मुख्य वार्डरों-
का सरदार सुना उसने
फाँसी लगने वाली तत्पर
हो, तो मन्त्र गुना उसने

''बेटा तेरी कुर्बानी का
आ पहुँचा है अन्त समय
पिता सदृश हूँ अतः कह रहा
कहते होता विकल हृदय

एक बात तुम मेरी मानो
''दो आदेश'' भगत बोले-
चतरसिंह बार्डर ने खुश हो
अपने अन्तर-पट खोले

''वाहे गुरु का नाम स्मरण कर
पाठ करो गुरुवाणी का
गुटका साथ लिये आया हूँ
करतब यह हर प्राणी का''

मार ठहाका हँसे भगत थे
कहा "अगर पहले कहते
क्या आपत्ति मुझे होती जो-
करता इसे समय रहते

अब तो समय न शेष, ईश को-
याद किया, वह कह देंगे
कितना बुजदिल है, कायर है
मेरी क्यों कर सुधि लेंगे ?

सारी उम्र बितादी यों ही
मौत-सामने डरता है
निर्भय हो कर चलने वाला
भय से अनुनय करता है

अच्छा होगा जिया जिस तरह
वैसे ही अब जीने दो
कायरता बेईमानी का
दाग नहीं लग पाने दो

लोग मुझे नास्तिक कह देंगे
किया न प्रभु का आराधन
इसकी चिन्ता नहीं, न बिखरे-
मेरे विश्वासों का धन

जैसे अबतक चला, चलूँ मैं
इसी तरह जग से जाऊँ
आजादी के मस्त तराने
ही जाते-जाते गाऊँ"

मौत देखकर पाँव न डोले
भगत सिंह मरदाने के
युग-युग तक कब संभव ?
भू पर ऐसे वीर न आने के

फिर लेनिन में लीन हुई थी
उनकी मन-आत्मा प्यासी
डूब तपस्या में हो बैठा-
जैसे कोई संन्यासी

हँसता कभी, कभी नम होता
उलझा वाद-विवादों में
आगे जो करना वह निर्णय
मृत्यु नहीं थी यादों में

ताला खुला कोठरी का-
भीतर कारा के अधिकारी
"हुक्म आ गया है फाँसी का
करलो अपनी तैयारी"

दायें हाथ चरित लेनिन का
बायाँ हाथ उठा ऊपर
"ठहरो एक क्रान्तिकारी-
दूजे से बात रहा है कर"

कड़क भरी आवाज उठी दो
दोस्त मिल रहे हों जैसे
डर उदासियों की फुरसत क्यों
कमल खिल रहे हों जैसे

छत की ओर उछाली पुस्तक
''चलो कहा फिर चल बैठे
राज और सुखदेव आ गये
मिलने हृदय मचल बैठे

खान बहादुर से बोले फिर
ये सारे बन्धन काटो
हमें एक होकर जाने दो
अलग-अलग अब मत बाँटो''

था विपरीत नियम के लेकिन
बन्धन काट सभी डाले
ऊपरवाले का विश्वासी
भय कैसे मन में पाले ?

बायें थे सुखदेव, राजगुरु
दायें हाथ लगाये थे
भुजा-भुजा में डाल कण्ठ स्वर
तीनों ने लहराये थे-

दिल से निकलेगी न मरकर भी वतन की उल्फत
मेरी मिट्टी से भी खुशबू ए वतन आयेगी

गाते गाते गीत खुशी से
फाँसी का फन्दा आगे
इतना ऊँचा स्वर जिसको सुन
सारा हिन्दुस्तां जागे

काली-काली काल कोठरी
काले-काले दिल वाले
अन्धकार को चले चीरते
तीन एक बन उजियाले

मिल अनेक बन एक गयी ज्यों
काले मेघों में बिजली
बिजली परवशता-पहाड़ को
चूर-चूर करने निकली

एक तीर था एक वीर था
भगत सिंह मतवाला था
अरि-श्रृंगों के लिये न बुझने-
वाली भीषण ज्वाला था

बाहर यज्ञ प्रज्वलित जैसे
ढकता धूम्र दिशाओं को
अखवारों की तीक्ष्ण सुर्खियाँ
देती हवा हवाओं को

जैसा चाह रहे थे वैसा
सारा वातावरण बना
आहुति दे देने का इससे
अच्छा अवसर नहीं घना

सुनते ही पग-चाप सिंह की
फाँसी गृह का द्वार खुला
पथरीले दिल, मौत-तराजू
जायेगा अनतुला तुला

बायें थे सुखदेव, राजगुरु
उनकी दायीं ओर खड़े
अपने-अपने फन्दे चूमे
डाल गले में स्वयं जड़े

गूँज गया था फाँसी का घर
इन्कलाब के नारों से
क्या हसरत थी, क्या चाहत थी
पूछो दर दीवारों से

वह अंगरेज कमिश्नर डिप्टी
यह देखा तो सहम गया
हिन्दुस्तानी ऐसे भी हैं
था उसको यह दृश्य नया

भगत सिंह आवाज-देशहित
जियो देश के लिये मरो
कहा कड़ककर जल्लादों से
"अब तुम अपना काम करो"

फन्दे कस नीचे आ तख्ता
गिरा दिया जल्लादों ने
आजादी के ज्योति-पुञ्ज को
बुझा दिया जल्लादों ने

काल कोठरी सूनी, सूने-
थे कारा के गलियारे
किंकर्त्तव्य विमूढ़ खड़े थे
पन्द्रह साथी मन मारे

पन्द्रह क्या पूरे भारत में
फैल गया था अँधियारा
ऊपर दूर गगन में लेकिन
कुछ हलचल कुछ उजियारा

राह विनिर्मित किये भगवती-
चरण खड़े थे आर्द्रनयन-
अश्फाकुल्ला खाँ, स्वागत में
नज्मों के रख दिये रतन

पुलकित थे राजेन्द्र लाहड़ी
आह्लादित रोशन बिस्मिल
आज़ादी के जाने कितने-
परवानों ने गाया मिल-

मेरा रंग दे बसन्ती चोला
जिसे पहन कर वीर शिवा ने माँ का बन्धन खोला
मेरा रंग दे बसन्ती चोला

यह चोला टीपू ने पहना हँसकर दी कुर्बानी
इसे पहन झाँसी की रानी खूब लड़ी मर्दानी
पहन इसे मेवाड़ का राणा जय-जय भारत बोला
मेरा रंग दे बसन्ती चोला

इसी रंग में रंगा गया है सारा हिन्दुस्तान
रंग बसन्ती ऐ मैं बताऊँ क्या है तेरी शान
देख के फाँसी का तख्ता भी दिल न हमारा डोला
मेरा रंग दे बसन्ती चोला

मौत से पहले यही दुआ है हो भारत आज़ाद
ओ भारत के वीर कभी जो आये हमारी याद
मौत को गले लगाकर गाना रंग दे बसन्ती चोला
मेरा रंग दे बसन्ती चोला

सन्दर्भ/शब्दार्थ

1. 3 मार्च 1931, 2. चिन्ता, 3. ढंग, 4. जुल्म, 5. सीमा, 6. संसार, 7. नाराज, 8. आसमान, 9. शिकायत, 10. शत्रु, 11. वालो, 12. महफिल वालो/संसार वालो, 13. प्रात:काल, 14. जिन्दगी, 15. मुट्ठी भर, 16. मिट्टी, 17. क्षण भंगुर, 18. विदा, 19. दुनियावालो

Indian Institute of Advanced Study
ACC NO. 140623
DATE 14.2.2003
SHIMLA

31580
4530

शान्ति स्वरूप 'कुसुम'

(संक्षिप्त परिचय)

हिन्दी-जगत् की पुरानी पीढ़ी के सिद्धहस्त गीतकार एवं महाकवि श्री शान्ति स्वरूप 'कुसुम' का जन्म मेरठ जनपद के धनौरा सिलवर नगर नामक ग्राम मे 24 अक्तूबर सन् 1923 ई० को हुआ। आपन श्री कृष्ण जन्माष्टमी सन् 1935 ई० को अपना प्रथम गीत 'हम करते वन्दन तेरा' भगवान श्री कृष्ण के चरणों में समर्पित कर, अपनी काव्य-यात्रा का शुभारम्भ किया। एक संस्कृत पाठी होने के कारण आपकी रचनाओं में शीघ्र ही निखार आ गया और 1940 ई० से पूर्व ही देश की सुप्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में अपना सम्मान-पूर्ण स्थान प्राप्त करना आरम्भ कर दिया।

'वीर अर्जुन' (साप्ताहिक), 'आज', 'दीदी', 'रानी', 'शान्ति', 'कोकिल', 'ज्ञानोदय', 'नवभारत टाइम्स', 'नवयुग', 'धर्मयुग', 'हिन्दुस्तान', 'हिन्दुस्तान साप्ताहिक', 'सरिता', 'सुमित्रा', 'समाज', 'वीणा', 'कादम्बिनी', 'नवनीत', 'रश्मि', 'आदर्श', 'विश्व ज्योति', 'अकला' आदि शताधिक पत्र-पत्रिकाओं मे आपकी सहस्राधिक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं एव यह क्रम निरन्तर गतिशोल है।

आपकी प्रमुख प्रकाशित कृतियों में 'रजतरेणु' (सम्पादित काव्य संकलन), 'पद-ध्वनि', 'पद-वन्दन', 'पद-चिह्न', 'धरती गाती है', 'हम बनजारे', 'स्वर्णिम घाटी', 'स्मृति गन्धा' (गीत संकलन), 'दशरथ नन्दिनी', 'लोपामुद्रा', 'सुकन्या', 'जनक-नन्दन', 'हठी दशानन' (खण्डकाव्य), 'चन्द्राभा', 'माधवी', 'सेनानी सुभाष', 'अमर शहीद भगत सिह' (महाकाव्य), 'क्रान्तिद्रष्टा भगत सिह' ग्रन्थों के नाम उल्लेखनीय हैं। जिनमें 'माधवी', 'दशरथ नन्दिनी' एवं 'सुकन्या' उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ से पुरस्कृत हो चुके हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आह्वान पर 12-13 अगस्त सन् 1942 को विद्याध्ययन त्याग कर 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में सक्रिय भाग लेने के कारण आप स्वतन्त्रता सेनानी की परिभाषा मे आते हैं।

हिन्दी संसार को आपसे बहुत-सी

वर्तमान पता : कुसुम निकेतन, जग
गाँधी रोड, बड़ौत (
दूरभाष : 01234-

Library IIAS, Shimla
H 811.8 Sh 19 K
00110623